हिंदी
विवेक
WE WORK FOR A BETTER WORLD
Issue : 07 -13 December 2025

ज्ञान के पट खोलती भारतीय भाषाएं

पितांबरी
होमकेअर डिवीजन
बर्तनों की सफाई का
Champion!
Antibacterial
PITAMBARI
DISHWASH GEL
THICKER
Antibacterial
PITAMBARI
DISHWASH LIQUID
150ml
THICKER
Antibacterial
PITAMBARI
DISHWASH LIQUID
500 ml
CLEAN
१५०, ५०० और ९०० मिली में उपलब्ध
कांच के बर्तन और क्रॉकरी के पुराने, चिकनाहट भरे दाग आसानी से साफ करता है।
बर्तनों पर कोई खरोच नहीं आती।
ANTIBACTERIAL
with lemongrass
Pitambari Products Pvt. Ltd.: Maharashtra: 8291853804, North: 7011012599, South: 6366932555,
East: 7752023380, 9867102999, CRM: 022 - 6703 5564 / 5699,
Toll Free: 18001031299 | Visit: www.pitambari.com/shop | CIN: U52291MH1989PTC051314

अनुक्रमणिका

■ बचानी होगी घरों में भाषाई विरासत	रामेंद्र सिन्हा	04
■ भाषा जोड़ती है, तोड़ती नहीं	डॉ. लोकेंद्र सिंह	06
■ राष्ट्रीय एकता की कड़ी 'भारतीय भाषा दिवस'	वेदप्रकाश पांडे	09
■ टिकाऊ साझेदारी का नया रोडमैप	प्रमोद जोशी	11
■ संसद का शीतकालीन सत्र जारी	आशीष कुमार 'अशु'	13
■ स्वान्त: सुखाय बहुजन हिताय	प्रो. शीला मिश्रा	16
■ दुल्हन ढूंढते चीनी युवा	संकलन	18
■ कृषि में संवारे भविष्य	सोनम लववंशी	19
■ विंटर टूरिज्म में आनंद, रोमांच व अवसर	निहारिका पोल सर्वटे	22
■ सर्दी में ऐसे रहें चुस्त	डॉ. अनुराधा नरवणे	24
■ कुरीतियों के घोर विरोधी: बालासाहब देवरस	संकलन	25
■ उडुपी में हिंदू सम्मेलन और श्री गुरुजी	संकलन	26
■ भारत बना तीसरा सबसे शक्तिशाली देश	संकलन	27
■अजब गजब	संकलन	28
■ समाचार	–	29

पंजीयन शुल्क

वार्षिक मूल्य : 500 रुपये, त्रैवार्षिक मूल्य : 1200 रुपये
पंचवार्षिक मूल्य : 1800 रुपये, आजीवन मूल्य : 20,000 रुपये

UPI पेमेंट गेटवे के लिए QR कोड स्कैन करें और मैसेज बॉक्स में अपना नाम, पता व सम्पर्क नम्बर दर्ज करें।

कार्यालय : प्लॉट नम्बर 7, आरएससी रोड नम्बर-10, सेक्टर-2, श्रीकृष्ण बिल्डिंग के पीछे, हनुमान मंदिर बस स्टॉप के समीप, चारकोप, कांदिवली (पश्चिम), मुंबई- 400067 फोन नं. : 022-28675299, 022-28678933

भारत में भाषाएं केवल बातचीत का माध्यम नहीं हैं, वे सांस्कृतिक विरासत और पहचान की वाहक हैं। प्रत्येक भाषा एक विशिष्ट दृष्टिकोण, साहित्यिक परम्परा और सांस्कृतिक तरीकों को दिखाती है। ऐसे में, सरकारी/सांगठनिक प्रयासों के साथ ही, हमारा अपने घर-समाज में स्थानीय भाषा और बोलियों का प्रयोग ही उनके अस्तित्व को बचाने में सहायक हो सकता है।

बचानी होगी घरों में भाषाई विरासत

11 दिसम्बर को भारतीय भाषा दिवस के रूप में भारतीय भाषाओं और भाषाई सद्भाव को बढ़ावा देने तथा भारत की समृद्ध भाषाई विरासत का उत्सव मनाने की तैयारी है। ऐसे में, राष्ट्रीय स्वयंसेवक संघ (आरएसएस) प्रमुख पू. डॉ. सरसंघचालक मोहन भागवत का यह कथन कि अंग्रेजी माध्यम शिक्षा-समस्या नहीं है, बल्कि घरों में भारतीय भाषाएं न बोलने की प्रवृत्ति देश की भाषाई विरासत के क्षरण को बढ़ा रही है, गम्भीर चिंता का विषय है। दूसरी ओर, भारत के मुख्य न्यायाधीश सूर्यकांत और जस्टिस बी.वी. नागरत्ना ने एक कार्यक्रम में यह संदेश दिया कि भारत जैसे विविधता वाले देश में भाषा संवाद का पुल होनी चाहिए, दीवार नहीं। पू. डॉ. सरसंघचालक मोहन भागवत ने पिछले दिनों नागपुर में एक कार्यक्रम में कहा कि स्थिति इतनी गम्भीर हो चुकी है कि 'कुछ भारतीय लोग अब अपनी ही भाषाएं ठीक से नहीं जानते।' उन्होंने कहा कि कभी संस्कृत ज्ञान, संवाद और दैनिक कार्यों की प्रमुख भाषा थी, लेकिन आज हालात उलट गए हैं अब कोई अमेरिकी प्रोफेसर हमें संस्कृत सिखाता है, जबकि हमें दुनिया को संस्कृत सिखानी चाहिए थी। साधु भी अंग्रेजी में संवाद करते हैं। पू. सरसंघचालक डॉ. मोहन भागवत ने बताया कि आज बहुत से बच्चों को अपनी मातृभाषा के सरल शब्द भी नहीं आते और घरों में अंग्रेजी मिश्रित मातृभाषा का प्रयोग आम हो गया है। उन्होंने स्पष्ट किया कि अंग्रेजी माध्यम शिक्षा-समस्या नहीं है, बल्कि घरों में भारतीय भाषाएं न बोलने की प्रवृत्ति देश की भाषाई विरासत के क्षरण को बढ़ा रही है। उन्होंने कहा कि अगर परिवार में अपनी भाषा ठीक से बोली जाए, तो स्थिति बहुत बेहतर हो सकती है।

रामेंद्र सिन्हा

पू. सरसंघचालक डॉ. मोहन भागवत ने उदाहरण देते हुए बताया कि संत ज्ञानेश्वर ने समाज की समझ बढ़ाने के लिए भगवद्गीता का सार मराठी भाषा में दिया। लेकिन अनेक भारतीय शब्द और अवधारणाएं इतनी गहन हैं कि उनका अंग्रेजी में सटीक अनुवाद ही नहीं हो पाता। उन्होंने पूछा, 'कल्पवृक्ष का अनुवाद अंग्रेजी में कैसे करोगे?' उनका कहना था कि अनेक भारतीय सांस्कृतिक शब्दों के लिए अंग्रेजी में अनेक शब्द लगाने पड़ते हैं, फिर भी उसका भाव पूरा नहीं आता।

दूसरी ओर, हाल ही में एक कार्यक्रम में भारत के मुख्य न्यायाधीश सूर्यकांत और जस्टिस बी. वी. नागरत्ना ने एक प्रश्न के उत्तर में मिला-जुला संदेश दिया कि भारत जैसे विविधतापूर्ण देश में भाषा संवाद का पुल होना चाहिए, दीवार नहीं। इस दौरान मुख्य न्यायाधीश ने स्पष्ट कहा, 'हमें उसी भाषा में बोलना चाहिए, जो वादी सुनना चाहता है।' वहीं, जस्टिस नागरत्ना ने बताया कि दक्षिण भारत में लोग हिंदी न जानने पर अलग-थलग पड़ने का डर अनुभव करते हैं। यह पूरा मुद्दा तब शुरू हुआ जब एक महिला वकील ने पूछा कि ऐसा क्या किया जा रहा है ताकि स्थानीय भाषाओं में माहिर लेकिन

अंग्रेजी न जानने वाले वकील कोर्ट में अपनी दलीलें रख सकें।

दिसम्बर 2025 में लगभग 146.9 करोड़ की जनसंख्या छूने वाले वाले भारत में 19,500 से अधिक भाषाएं और बोलियां बोली जाने के दावे हैं। प्रत्येक भाषा भारत की सांस्कृतिक विविधता और एकता की अभिव्यक्ति है। हालांकि, भारत के संविधान के अनुसार, इनमें से हिंदी, अंग्रेजी, बंगाली, तेलुगु, मराठी, तमिल, गुजराती, उर्दू और पंजाबी समेत 22 ही आधिकारिक भाषाएं हैं। भारत की भाषाई विविधता की सबसे दिलचस्प बातों में से एक यह है कि इनमें से अनेक भाषाओं की अपनी विशेष स्क्रिप्ट हैं। उदाहरण के लिए, हिंदी और मराठी देवनागरी स्क्रिप्ट में लिखी जाती हैं, जबकि बंगाली, बंगाली स्क्रिप्ट में लिखी जाती है। इसी तरह, तमिल को तमिल स्क्रिप्ट में और तेलुगु को तेलुगु स्क्रिप्ट में लिखा जाता है। इन लिपियों के अपने अलग अक्षर और निशान होते हैं, और वे उन क्षेत्रों की सांस्कृतिक विरासत का एक प्रमुख अंग हैं जहां उनका प्रयोग होता है। यह अलग-अलग तरह की भाषाएं भारत को पापुआ न्यू गिनी, इंडोनेशिया और नाइजीरिया के बाद दुनिया का चौथा सबसे अधिक अलग-अलग भाषाएं बोलने वाला देश बनाती हैं।

भाषाई विविधता को भारत की सांस्कृतिक समृद्धि के संकेत के रूप में देखा जा सकता है, यह देश के लिए कुछ महत्वपूर्ण चुनौतियां भी पेश करता है। एक समस्या हिंदी और अंग्रेजी जैसी मुख्य भाषाओं के अतिरिक्त दूसरी भाषाओं में पढ़ाई की कमी है। फलस्वरूप, अनेक भारतीय भाषाएं समाप्त हो रही हैं। यूनेस्को के अनुसार, भारत में जबरदस्त भाषाई विविधता के बावजूद, लगभग 200 भाषाएं अस्तित्व के संकट से जूझ रही हैं। इन्हें बचाने का प्रयास चल रहा है। राष्ट्रीय शिक्षा नीति 2020 अनेक भाषाओं वाली शिक्षा पर जोर देती है और सलाह देती है कि पढ़ाई का माध्यम कम से कम क्लास 5 तक, और बेहतर होगा कि क्लास 8 और उसके बाद तक मातृभाषा/स्थानीय भाषा हो। यह ज्यादा लचीनेपन के साथ तीन-भाषा फॉर्मूला का समर्थन करती है, जिससे छात्र और राज्य भाषाएं चुन सकते हैं, बस शर्त यह है कि तीन में से कम से कम दो भारत की हों। सरकार ने सेंट्रल इंस्टीट्यूट ऑफ इंडियन लैंग्वेजेज बनाया है और अनेक गैर-सरकारी संगठन खतरे में पड़ी भाषाओं का प्रलेखन कर रहे हैं, शब्दकोष बना रहे हैं, और पढ़ाने का सामान बना रहे हैं।

भाषाई विविधता और देश की समृद्ध सांस्कृतिक विरासत को बनाए रखने के लिए आवश्यक है कि एक ऐसी भाषा को प्रोत्साहन मिले जो राष्ट्र स्तर पर सर्वाधिक बोली जाती हो। ●●●

राष्ट्रीय स्वयंसेवक संघ को समझने के लिए मौलिक एवं संग्रहणीय पुस्तक

हिंदी विवेक
" We Work For A Better World"

पद्मश्री रमेश पतंगे लिखित
'हिंदी विवेक' द्वारा प्रकाशित

हम संघ में क्यों हैं...

संघ विचारों की मूल प्रेरणा, संघकार्य को समझने की प्रक्रिया और इन सभी से संघ स्वयंसेवकों को अनायास मिलनेवाले राष्ट्रबोध और कर्तव्यबोध का वर्णन इस पुस्तक में किया गया है।

पंजीयन करें

पुस्तक का मूल्य ₹250/-

Draft or Cheque should be drawn in the name of **HINDUSTHAN PRAKASHAN SANSTHA HINDI VIVEK**

Bank Details : State Bank of India, **Branch -** Charkop, A/C No. : 00000043884034193, IFSC Code : SBIN0011694

UPI पेमेंट गेटवे के लिए QR कोड स्कॅन करे और मैसेज बॉक्स मे अपना नाम, पता व सम्पर्क नंबर दर्ज करें।

ग्रंथ पंजीकरण हेतु पत्रिका के स्थानीय प्रतिनिधि अथवा कांदिवली कार्यालय में सम्पर्क करें।

प्रशांत : 9594961855, संदीप : 9082898483, भोला : 9702203252, कार्यालय : 9594991884

भाषा जोड़ती है तोड़ती नहीं

भारतीय भाषा व भारतीय शब्दकोश बहुत समृद्ध है। भाषा ही संवाद बनकर एक-दूसरे को जोड़ती है। फिर भाषा को लेकर लोगों के मन में आक्रोश क्यों फूटता है और इसके विरोध की चिंगारी एक जगह से दूसरे जगह क्यों छिटकती है।

डॉ. लोकेंद्र सिंह

जब कहीं से यह समाचार पढ़ने/सुनने को मिलता है कि मराठी, तमिल, तेलगू या अन्य कोई भाषा नहीं बोलने के कारण व्यक्ति के साथ मारपीट कर दी गई, तो दु:ख होता है कि संकीर्ण राजनीति हमें किस दिशा में लेकर जा रही है। हम अपनी ही भाषाओं का सम्मान क्यों नहीं कर रहे हैं? जो भाषाएं आपस में जुड़ी हैं, उनके नाम पर हम एक-दूसरे से दूर क्यों हो रहे हैं? भारत की सभी भाषाओं के शब्द भंडार एक-दूसरे के शब्दों से समृद्ध हैं। हमें तो भाषाई विविधता का उत्सव मनाना चाहिए। भारत की संस्कृति की विशेषता है कि वह विविध रूपों में प्रकट होती है। हम सब मिलकर 11 दिसम्बर को महान तमिल कवि सुब्रह्मण्यम भारती की जयंती प्रसंग पर 'भारतीय भाषा दिवस' मनाते हैं। यह प्रसंग ही हमें भाषाओं के प्रति संवेदनशील होने की ओर संकेत करता है और बताता है कि भाषाएं मानवीय सम्बंधों में सेतु का कार्य करती हैं। एक-दूसरे से जोड़ती हैं। तमिल को प्राथमिकता देने के बावजूद सुब्रह्मण्यम भारती ने हिंदी और तेलुगु सहित अन्य भारतीय भाषाओं के प्रति भी सम्मान दिखाया। वे चाहते थे कि सभी भारतीय भाषाओं के बीच ज्ञान का आदान-प्रदान हो, जिससे भारत एक सशक्त राष्ट्र बन सके। उनका स्पष्ट दृष्टिकोण था कि भारत की विभिन्न भाषाएं उसकी कमजोरी नहीं, बल्कि उसकी शक्ति और सुंदरता हैं।

भाषा मनुष्यों के बीच विचारों, भावनाओं और सूचनाओं के सुचारू आदान-प्रदान को सम्भव बनाती हैं। यदि भाषा न हो, तो यह सब सम्भव नहीं हो सकता। भाषा को लेकर अगर हम किसी संकीर्ण विचार से ग्रसित नहीं हैं, तब यह हमें एक अलग दुनिया की सैर कराती है, जहां एक-दूसरे के प्रति सम्मान है, अपनत्व है, एक-दूसरे से जुड़ने की ललक है। आपने कभी सोचा है कि कितना अपनापन लगता है जब कोई हमारी मातृभाषा में बात करता है या फिर हम सामने वाले की मातृभाषा में बात करने का प्रयास करते हैं। चूंकि मैं हिंदी भाषी हूं तो जब किसी मलयाली, कन्नड़, असमिया, बांग्ला, तमिल या तेलगू सहित अन्य भारतीय भाषा बोलने वाले को हिंदी में भाषण देते या बात करते हुए सुनता हूं तो जिस आनंद की अनुभूति होती है, उसका वर्णन यहां सम्भव नहीं है। मैं भी प्रयासपूर्वक अन्य भारतीय भाषाओं में एक-दो वाक्य सीखकर उनके साथ अपनेपन का रिश्ता बनाने की ओर एक-दो कदम बढ़ाता हूं। सच, मानिए यह पहल हृदयों को मिलाने का काम करती है। भारतीय राजनीति में इसका उदाहरण प्रधान मंत्री नरेंद्र मोदी के रूप में हमारे सामने है। सम्पूर्ण देश में उनकी लोकप्रियता का कारण है कि वे जिस स्थान पर और जिन लोगों के बीच भाषण दे रहे होते हैं, उनके साथ संवाद स्थापित करने के लिए अभिवादन उनकी ही भाषा में करते हैं। प्रधान मंत्री मोदी दुनिया के अलग-अलग देशों के राष्ट्राध्यक्षों

को सोशल मीडिया पर बधाई-शुभकामना एवं अन्य विषयों से जुड़े महत्वपूर्ण पोस्ट भी उनकी ही भाषा में करते हैं। यानी देश-दुनिया को जोड़ने के लिए भाषा का बेहतरीन उपयोग हम प्रधान मंत्री मोदी से सीख सकते हैं।

अनुवाद और बहुभाषावाद के माध्यम से भाषाएं सांस्कृतिक दूरियों को कम करती हैं। एक भाषा सीखना दूसरे समुदाय के विचारों और जीवनशैली को समझने का द्वार खोलता है, जिससे हमारे पूर्वाग्रह भी कम होते हैं। इसलिए व्यक्ति को अपनी मातृभाषा के अलावा दूसरी भाषा सीखने का प्रयास भी करना चाहिए। 'भाषा जोड़ती है, तोड़ती नहीं', यह आदर्श विचार इस दृष्टिकोण पर आधारित है कि भाषा लोगों को एक-दूसरे से जुड़ने, भावनाएं साझा करने और सांस्कृतिक समझ को बढ़ावा देने में सहायता करती है। भाषा के नाम पर भारतीय समाज को तोड़ने को षड़यंत्र का हिस्सा बन रहे लोगों को यह बात भली प्रकार से समझनी चाहिए। उन्हें अपनी ऊर्जा भारतीय भाषाओं को समृद्ध करने में लगानी चाहिए। विशेषकर, संकीर्ण राजनीति के प्रभाव में आकर हिंदी का विरोध करने वाले बंधुओं को यह देखना चाहिए कि हिंदी का विकास एवं विस्तार अहिन्दी भाषी महानुभावों ने अधिक किया है, जिनमें प्रमुख हैं- स्वामी दयानंद सरस्वती, महात्मा गांधी, माधवराव सप्रे, विनोबा भावे, गोपालस्वामी अय्यंगर, डॉ. चलसानि सुब्बाराव, काका कालेलकर, आर. वेंकटरमण, ज्योतिराव फुले इत्यादि। हिंदी की पहली कहानी 'एक टोकरी भर मिट्टी' के रचनाकार प्रख्यात पत्रकार माधवराव सप्रे संदेश देते हैं कि 'मैं मराठी हूं, लेकिन हिंदी के विषय में मुझे उतना ही अभिमान है, जितना किसी हिंदी भाषी को हो सकता है।' वहीं, स्वामी दयानंद सरस्वती मानते थे कि हिंदी द्वारा सारे भारत को एक सूत्र में पिरोया जा सकता है। इस प्रकार के राष्ट्रीय दृष्टिकोण की आवश्यकता है, जो भाषा के वास्तविक उद्देश्यों को स्थापित करता है।

सदैव स्मरण रखें कि जब भाषा को सम्मान, समावेश और समझ के साथ प्रयोग किया जाता है, तो यह निश्चित रूप से 'जोड़ती' है। हमारे पुरखों ने ऐसा करके दिखाया है। सम्पूर्ण भारत में इसके अनुकरणीय उदाहरण हमें मिलते हैं। इसलिए हमें अपनी भाषाई विविधता का उत्सव मनाना चाहिए और हर भाषा को सम्मान देना चाहिए, क्योंकि प्रत्येक भाषा एक अनमोल सांस्कृतिक खजाना है। हम एक-दूसरे की भाषा को सीखें, समझें और भावनाओं से लेकर शाब्दिक आदान-प्रदान करें।

●●●

स्वयं के लिए और अपने परिजनों के लिए ग्रंथ का पंजीयन करें

इस ग्रंथ में आप पढ़ेंगे

- संघ में हो रहे अनगिनत सेवा कार्यों का परिणाम क्या है?
- डॉ. हेडगेवार जी से लेकर डॉ. मोहन भागवत जी तक के सभी सरसंघचालकों का दिशादर्शन...
- राजनीति को केंद्र में न रखकर राष्ट्रीयत्व को क्यों केंद्र में रखा?
- भारत के सम्मुख चुनौतियां और संघ कार्य का प्रभाव
- संघ विचारधारा और परिवर्तन

जैसे विविध मौलिक विषय

ग्रंथ का मूल्य ₹700/-

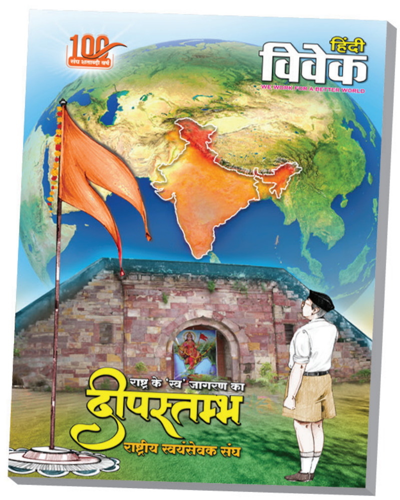

ईमेल – hindivivekvargani@gmail.com

Draft or Cheque should be drawn in the name of HINDUSTHAN PRAKASHAN SANSTHA HINDI VIVEK

Bank Details : State Bank of India, **Branch -** Charkop, A/C No. : 00000043884034193, IFSC Code : SBIN0011694

ग्रंथ पंजीकरण हेतु पत्रिका के स्थानीय प्रतिनिधि अथवा कांदिवली कार्यालय में सम्पर्क करें।

सम्पर्क प्रशांत : 9594961855, संदीप : 9082898483
भोला : 9702203252, कार्यालय : 9594991884

UPI पेमेंट गेटवे के लिए QR कोड स्कॅन करे और मैसेज बॉक्स मे अपना नाम, पता व सम्पर्क नंबर दर्ज करें।

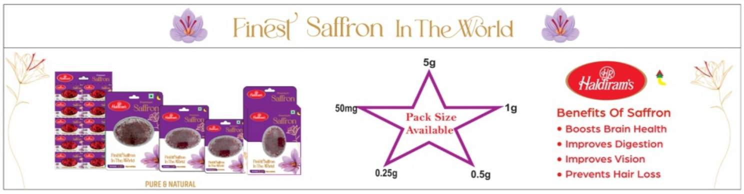

Haldiram's

Vipin Aggarwal
THE SAFFRON EXPERT ™

केसर तिलक

★दिव्यता ★ समृद्धि ★ शुभ भाग्य
★संपत्ति ★ कैरियर के अच्छे अवसर

अपने भीतर बुद्धि, दूरदर्शिता समृद्धि और भक्ति बढाने के लिए केसर तिलक लगाऐ।

तिलक लगाने का अर्थ है चक्रों और ऊर्जा बिंदुओं को सक्रिय करना जिससे आपके भीतर अधिक सामंजस्य और खुशी का विकास होता है। केसर तिलक **आज्ञा चक्र** पर लगाया जाता है, जो माथे का मध्य भाग है, यह चक्र दिव्यता, अंतर्ज्ञान और बुद्धि से संबंधित है। मनुष्य के सभी कार्य इसी विशिष्ट बिंदु द्वारा नियंत्रित होते हैं, और संतुलित होने पर यह भावनात्मक, शारीरिक और आध्यात्मिक ऊर्जा को बढाता है। **विशुद्धि चक्र** का संबंध संचार और अभिव्यक्ति से है। नाभि मनुष्य के शरीर का सबसे महत्वपूर्ण बिंदु है और यह मानव जीवन का केंद्र है जो **मणिपुर चक्र** से संबंधित है।

ज्योतिषीय दृष्टि से केसर का तिलक बृहस्पति (बुद्धि, धन, आध्यात्मिकता), बुध (वित्त, बुद्धि, संचार, भावनात्मक ऊर्जा), केतु (अंतर्ज्ञान, अंतर्दृष्टि और आंतरिक शांति की भावना) और मंगल का समर्थन) की ऊर्जा को संतुलित करता है।*

केसर तिलक कैसे तैयार करें

कुछ पिसे हुए केसर के रेशे (धागे) या केसर पाउडर लें, उसमें पवित्र जल या गंगाजल की कुछ बूँदें डालकर पेस्ट बना लें। आपका केसर का तिलक तैयार है। अपने जीवन को बेहतर बनाने और ऊर्जा बिंदुओं को संतुलित करने के लिए **अनामिका उंगली** से माथे, कानों, गले और नाभि पर लगाएँ। चाँदी की डिब्बी में इसे तैयार करना व रखना अधिक शुभ माना जाता है।

*Data on file

GROCERIES IMPEX : +91-9999092561, 9650635204 | vipin@groceriesimpex.com
Registered Office Address : R-49, Rita Block, Shakarpur, Delhi-110092.
Packing Unit : D-94/A, Matiala Extension, Dwarka, New Delhi-110059.

आदर्श

राष्ट्रीय एकता की कड़ी 'भारतीय भाषा दिवस'

वेदप्रकाश पांडे

भारतीय भाषा दिवस का आयोजन युवा पीढ़ी को भाषाई विविधता के माध्यम से भारतीय संस्कृति की विविधता को समझने का अवसर देगा तथा देश की भाषाई विविधता पर सकारात्मक ढंग से सोचने का मार्ग भी दिखाएगा।

'भारतीय भाषा दिवस' मनाने की शुरुआत एक भारत, श्रेष्ठ भारत की अवधारणा को मूर्त रूप देने की दिशा में उठाया गया एक महत्वपूर्ण कदम है। भारत जैसे बहु भाषा-भाषी देश में, जहां अनेक भाषाएं एवं लिपियां हैं। प्रत्येक प्रांत की अपनी एक भाषा है एवं उन भाषाओं के लिए लिपि भी। तमिल, कन्नड़, तेलुगू, मलयालम, मराठी, बांग्ला, गुजराती, असमी, उड़िया, राजस्थानी आदि अनेक भारतीय भाषाएं हैं और राष्ट्रीय स्तर पर इन भाषा-भाषियों को जोड़ने का काम करती है राष्ट्रीय सम्पर्क भाषा हिंदी। भारत का भाषाई परिदृश्य विश्व में सबसे अनूठा है। जहां एक ओर विश्व में भाषाई आधार पर राष्ट्र विभाजन के कई उदाहरण देखने को मिलते हैं, वहीं दूसरी तरफ भारत में भाषाई विविधता से एकता के सूत्र तथा भारत की विभिन्न भाषाओं में सृजित साहित्य सम्पदा में भारतीय संस्कृति के समन्वयकारी सूत्र मिलते हैं। इसलिए भारतीय भाषा परिवार की सभी भाषाओं के बीच एकात्म भाव को सुदृढ़ करना और देश के प्रत्येक नागरिक में भारतीयता की भावना को प्रबल बनाने के लिए भारतीय भाषाओं के बीच की दूरी को कम करना नितांत आवश्यक है। भारत की बहुभाषिकता देश के लिए समस्या नहीं है बल्कि राष्ट्रीय एकता को मजबूत करने का सशक्त माध्यम बन सकती है।

भारत के एक प्रांत का व्यक्ति जब किसी दूसरे प्रांत में जाता है तो उसे वहां की भाषा का ज्ञान न होने पर परेशानियों का सामना करना पड़ता है। मेरा अपना व्यक्तिगत अनुभव रहा है। दिसम्बर 1987 में जब मैं पहली बार अयोध्या से बेंगलूरु आया और फिर यहीं का होकर रह गया। तब शुरुआती दिनों में मुझे कन्नड़ भाषा के ज्ञान के अभाव में अधिक परेशानियां थीं। हालांकि हिंदी और अंग्रेजी से काम चल जाता था। लेकिन मन में यह भाव उठता था कि अगर कन्नड़ सीख लूं तो अच्छा होगा। उन दिनों मेरे पड़ोस में केरल की एक नर्स रहती थी। वह हिंदी सीखने के लिए दूरदर्शन पर हिंदी की फिल्में देखा करती थी। उन्हें देखकर मेरे मन में भी यह विचार आया कि इस तरह से मैं भी कन्नड़ सीख सकता हूं। धीरे-धीरे कन्नड़ बोलना और समझना तो आने लगा, लेकिन लिखना-पढ़ना अब तक नहीं सीख पाया। पत्रकारिता के क्षेत्र से जुड़ने के बाद कई बार कन्नड़ के मूर्धन्य लेखकों व साहित्यकारों से मिलने का अवसर मिला तो कन्नड़ के समृद्ध साहित्य का परिचय मिलने पर कन्नड़ भाषा न सीख पाने की कमी बहुत खली। कभी-कभी यह कमी बहुत अखरती है। विद्यार्थी परिषद से जुड़ा रहने के कारण यहां आने के बाद कई बार राष्ट्रीय स्वयंसेवक संघ के वरिष्ठ पदाधिकारियों से मिलने का अवसर मिला। मैंने देखा कि उन्हें अपनी मातृभाषा और हिंदी के अलावा कई अन्य भारतीय भाषाओं का ज्ञान होता था। उनसे भी कन्नड़ सीखने की प्रेरणा मिली, किंतु काम तो चल ही रहा है इस सोच के कारण कभी पूरे मनोयोग से प्रयास ही नहीं कर पाया।

संघ के प्रचारक से प्रधान सेवक के पद तक पहुंचे भारत के

प्रधान मंत्री नरेंद्र मोदी की 'एक भारत, श्रेष्ठ भारत' की अवधारणा को सही मायने में साकार करने के लिए प्रत्येक देशवासी में भारतीयता की भावना का प्रबल होना आवश्यक है। स्वतंत्रता आंदोलन के दौरान उत्तर से दक्षिण और पूरब से पश्चिम तक देश के कोने-कोने में रहने वाले देशवासियों में राष्ट्रीयता की जो प्रबल भावना देखने को मिलती थी, वह स्वतंत्रता के बाद धीर-धीरे विलुप्त होती गई। इस दिशा में राष्ट्रीय स्तर पर 'भारतीय भाषा दिवस' के आयोजनों से भाषाई सौहार्द्र की भावना दृढ़ से दृढ़तर होगी तथा भाषा के नाम पर कुछेक राज्यों में यदा-कदा होने वाले राजनीतिक विवादों का आधार भी समाप्त हो जाएगा। इसके लिए यह आवश्यक है कि प्रत्येक भारतीय अपनी मातृभाषा, राष्ट्रीय सम्पर्क भाषा हिंदी के साथ ही साथ भारतीय भाषा परिवार की अन्य भाषाओं की भी सीखें ताकि आवश्यकता पड़ने पर उसका उपयोग कर सकें। केंद्र सरकार की राष्ट्रीय शिक्षा नीति-2020 में भारतीय भाषाओं की समृद्ध विरासत को महत्वपूर्ण ढंग से रेखांकित किया गया है। सभी भारतीय भाषाओं को विद्यार्थियों को उच्चतम गुणवत्ता के साथ पढ़ाने, एक भाषा को अच्छी तरह से सिखाने और सीखने के लिए उसे शिक्षा का माध्यम होने की आवश्यकता नहीं है। वर्तमान में शिक्षा के क्षेत्र में भारतीय भाषाओं को प्रोत्साहन दिए जाने के लिए निरंतर हरसम्भव प्रयास किए जा रहे हैं। भारतीय भाषाओं के प्रति हीनता बोध की स्थिति को दूर करने के प्रयास किए जा रहे हैं। तकनीक के स्तर पर विभिन्न ई-कॉमर्स, सोशल मीडिया प्लेटफॉर्मों पर भी भारतीय भाषाएं निरंतर प्रगति कर रही हैं। इसके साथ ही उच्च शिक्षा क्षेत्र में तकनीक, मेडिकल आदि की पाठ्य पुस्तकें भारतीय भाषाओं में प्रकाशित कराकर भाषाई आत्मनिर्भरता की दिशा में तेजी से कदम बढ़ाए जा रहे हैं। देश में भारतीय भाषाओं को नवाचारों से जोड़ने के प्रयास निश्चित ही फलीभूत होते दिख रहे हैं। सरकारी स्तर पर तो प्रयास हो ही रहे हैं, साथ ही निजी क्षेत्र में भी स्थानीय भाषाओं का प्रभाव भी दिखने लगा है। इसके साथ ही 'काशी तमिल संगम' के आयोजन जैसे सराहनीय प्रयास भी जारी हैं। इसके माध्यम से भाषाई, सांस्कृतिक तथा सामाजिक सम्बंधों को नए रूप में परिभाषित करने तथा भारतीय ज्ञान प्रणाली को आधुनिक स्वर देने की दिशा दिखाई जा रही है ताकि युवापीढ़ी भारतीय संस्कृति एवं लोकाचार में आस्थावान हो सके। इसी कड़ी को आगे बढ़ाते हुए 'भारतीय भाषा दिवस' मनाने की शुरुआत की गई है, जिसके अन्तर्गत देश भर के शिक्षण संस्थानों में भारतीय भाषाओं के संरक्षण एवं संवर्धन को बढ़ावा देने वाले कार्यक्रम आयोजित होते हैं। इन कार्यक्रमों में अच्छी संख्या में विद्यार्थियों की भागीदारी सुनिश्चित की जाती है। ●●●

राष्ट्रीय भावनाओं को जाग्रत करनेवाली सामाजिक व पारिवारिक पत्रिका

हिंदी विवेक
We Work For A Better World
मासिक पत्रिका

शुल्क ₹ 500

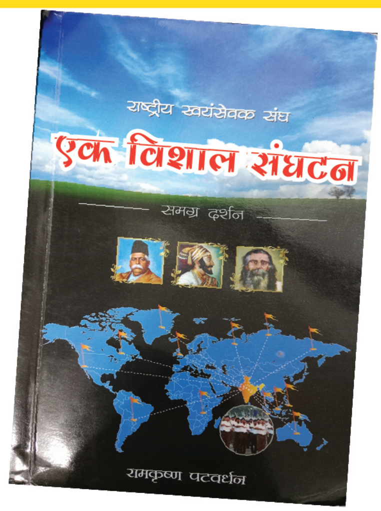

रा. स्व. संघ की स्थापना से लेकर शतकपूर्ति की यात्रा के विभिन्न पड़ावों तथा भविष्य के उद्देश्यों का सम्पूर्ण संकलन व आंकलन करने वाली पुस्तक

UPI पेमेंट गेटवे के लिए QR कोड स्कॅन करे और मैसेज बॉक्स मे अपना नाम, पता व सम्पर्क नंबर दर्ज करें।

ऑनलाईन पंजीयन करने के बाद कृपया 9594991884 पर कॉल करके सूचित करें या व्हाट्सअप करें।

Draft or Cheque should be drawn in the name of : HINDUSTHAN PRAKASHAN SANSTHA-HINDI VIVEK

Bank : Bank of Maharashtra **Branch :** Prabhadevi
A/C No. : 60085108000 **IFSC :** MAHB0000318

सम्पर्क - 9594991884 Email : hindivivekvargani@gmail.com

टिकाऊ साझेदारी का नया रोडमैप

पुतिन की भारत यात्रा जहां अमेरिकी राष्ट्रपति की नीतियों का सम्यक उत्तर है, वहीं पुतिन के सामने भारत ने यह भी स्पष्ट कर दिया कि यूक्रेन का युद्ध खत्म करने के लिए उसे भी प्रयत्नशील होना चाहिए।

प्रधान मंत्री नरेंद्र मोदी और रूसी राष्ट्रपति व्लादिमीर पुतिन के बीच शुक्रवार 5 नवम्बर को हुई वार्ता के बाद, जिन समझौतों की घोषणा की गई है, उनसे इस बात का अनुमान लगाया जा सकता है कि दोनों देश एक नए आर्थिक रोडमैप को तैयार कर रहे हैं। दोनों देशों ने 2030 तक के लिए 100 अरब डॉलर के व्यापार के लिए आर्थिक रोडमैप तैयार करने पर सहमति जताई है और कामगारों की गतिशीलता, उर्वरक आपूर्ति, नाभिकीय ऊर्जा सहयोग तथा रूसी नागरिकों के लिए 30 दिन तक निःशुल्क पर्यटक वीजा देने के समझौतों पर हस्ताक्षर किए गए हैं।

सोवियत संघ के समय से ही रक्षा क्षेत्र भारत-रूस सम्बंधों की रीढ़ रही है। 1965 में भारत पर अमेरिकी शस्त्र-प्रतिबंध के साथ-साथ तकनीकों को साझा करने और उत्पादन को स्थानीय बनाने की रूस की इच्छा ने इस सहयोग को और मजबूत किया। हाल में ऑपरेशन सिंदूर के दौरान भारत की जिन दो शस्त्र-प्रणालियों ब्रह्मोस और एस-400 की उल्लेखनीय भूमिका रही, उन दोनों में रूसी सहयोग रहा है। इस यात्रा के दौरान हालांकि रक्षा से जुड़े किसी नए कार्यक्रम की घोषणा नहीं की गई है, पर इसका अर्थ यह नहीं है कि किसी कार्यक्रम पर बात नहीं हो रही है। हालांकि भारत-रूस रिश्तों को आमतौर पर रक्षा-सहयोग के लिए जाना जाता है, जो धीरे-धीरे कम हो रहा है, फिर भी पांचवीं पीढ़ी के लड़ाकू विमानों और एस-400 तथा एस-500 जैसी वायु रक्षा प्रणालियों के मामले में कुछ नए समझौते भविष्य में सम्भव हैं।

राष्ट्रपति पुतिन की यात्रा शुरू होने के ठीक पहले रूसी संसद 'स्टेट ड्यूमा' ने भारत के साथ एक महत्वपूर्ण सैन्य समझौते को मंजूरी दी। यह समझौता दोनों देशों के बीच लम्बे समय से लंबित 'रेसिप्रोकल एक्सचेंज ऑफ लॉजिस्टिक्स एग्रीमेंट'(रेलोस) है। इस समझौते के अनुसार, दोनों देशों की सेनाएं एक-दूसरे को सैन्य सहायता प्रदान करेंगी, अर्थात एक देश की सेनाएं दूसरे देश के सैन्य आधारभूत ढांचे का उपयोग कर सकेंगी। अब यह भी अनुभव किया जा रहा है कि रक्षा के इर्द-गिर्द बनी साझेदारी में, टिकाऊ बदलाव के लिए गहरे आर्थिक जुड़ाव की आवश्यकता

प्रमोद जोशी

होगी। राष्ट्रपति व्लादिमीर पुतिन की 4-5 दिसम्बर को भारत की यात्रा, यूक्रेन युद्ध शुरू होने के बाद उनकी पहली यात्रा थी और भारत पर रूसी तेल खरीदना बंद करने के पश्चिमी दबाव की पृष्ठभूमि के मद्देनजर इसका महत्व था। दोनों नेताओं ने हैदराबाद हाउस में एक घंटे से अधिक समय तक बैठक की, जहां उन्होंने यूक्रेन की स्थिति और आर्थिक, राजनीतिक और रणनीतिक क्षेत्रों में सहयोग पर चर्चा की।

अमेरिकी आर्थिक-प्रतिबंधों के कारण भारत को रूस से खनिज पेट्रोलियम की खरीद रोकने के लिए मजबूर होना पड़ा है, पर इसका अर्थ यह नहीं है कि दोनों देशों के बीच ऊर्जा सहयोग नहीं होगा। भारत के नाभिकीय ऊर्जा कार्यक्रम में आज भी रूस सबसे बड़ा सहयोगी देश है। इसके अलावा देश के अंतरिक्ष अनुसंधान कार्यक्रम का आधार रूसी सहयोग है। परमाणु ऊर्जा सहयोग पर बात करते हुए, पुतिन ने कहा, 'हम भारत के सबसे बड़े परमाणु ऊर्जा संयंत्र, कुडनकुलम के निर्माण के लिए एक प्रमुख परियोजना पर भी काम कर रहे हैं। 6 में से 2 रिएक्टर इकाईयों को ऊर्जा नेटवर्क से जोड़ दिया गया है और चार अभी निर्माणाधीन हैं। इस परमाणु ऊर्जा संयंत्र को पूर्ण क्षमता पर लाने से भारत की ऊर्जा आवश्यकताओं में उल्लेखनीय योगदान मिलेगा, जिससे भारतीय उद्यमों और घरों को सस्ती और स्वच्छ ऊर्जा उपलब्ध कराने में सहायता मिलेगी। उन्होंने कहा, 'हमने छोटे मॉड्यूलर रिएक्टरों और तैरते परमाणु ऊर्जा संयंत्रों के निर्माण के बारे में बात की, तथा परमाणु प्रौद्योगिकियों के गैर-ऊर्जा अनुप्रयोगों के बारे में भी बात की, उदाहरण के लिए चिकित्सा तथा कृषि क्षेत्र में।' तेजी से बदलती वैश्विक परिस्थितियों में भारत और रूस के रिश्ते एक नए दौर में प्रवेश कर रहे हैं। दूसरी तरफ यह भी स्पष्ट है कि भारत और अमेरिका तथा यूरोप के साथ रिश्ते भी जारी रहेंगे। वस्तुतः भारत अब अपनी स्वतंत्र विदेश-नीति को ज्यादा अच्छे तरीके से परिभाषित करने की स्थिति में आ गया है। जल्द ही अमेरिका से एक व्यापार प्रतिनिधिमंडल के भारत आने की आशा है। वहीं यूरोप के साथ मुक्त व्यापार समझौते की वार्ता में तेजी आई है। आर्थिक परिस्थितियां सभी देशों को अब आर्थिक-सम्बंधों के सुधारने की प्रेरणा दे रही हैं।

पुतिन की इस यात्रा के साथ वैश्विक-राजनीति के अनेक सूत्र जुड़े हुए हैं। रूस को अलग-थलग करने का प्रयास जारी है। ऐसे में उसका भारत के साथ रिश्तों को मजबूत करना उसके दीर्घकालीन हित में है। भारत ने भी समय पर उसे सहारा दिया है। उसके चीन के साथ अच्छे रिश्ते हैं, पर हाल में राष्ट्रपति ट्रम्प ने चीन के साथ रिश्तों को सुधारने का प्रयास किया है। अमेरिका-रूस, अमेरिका-चीन और भारत-चीन रिश्ते भी नई शक्ल ले रहे हैं। ट्रम्प और पुतिन के भी आपसी अच्छे रिश्ते हैं। अधिकतर सवाल किया जाता है कि चीन से घनिष्ठता को देखते हुए क्या रूस भारत के साथ न्याय कर पाएगा? क्यों नहीं? बल्कि रूस संतुलनकारी भूमिका निभा सकता है। उधर यूरोप के देशों का रूस के साथ परम्परागत कारोबार है। विशेषतौर से रूसी गैस यूरोप के लिए महत्वपूर्ण है। यदि यूक्रेन के युद्ध में रूस अपनी शर्तों को मनवाने में सफल रहेगा, तो उसका यूरोप में प्रभाव भी बढ़ेगा। भारत और रूसी खेमे के यूरेशियन इकोनॉमिक यूनियन (ईएईयू) के बीच भी व्यापार समझौता होने की सम्भावना है। भारत ने रूस के सुदूर पूर्वी व्लादीवोस्तक में हो रहे नए विकास में भी निवेश किया है। नरेंद्र मोदी सितम्बर 2019 में ईस्टर्न इकोनॉमिक फोरम के सालाना अधिवेशन में शामिल होने के लिए व्लादीवोस्तक गए थे। उन्हें सम्मेलन में मुख्य अतिथि बनाया गया था। 2022 में भी उन्होंने फोरम को सम्बोधित किया था।

इन तथ्यों से यह बात स्पष्ट होती है कि भारत अब अपने हितों की रक्षा के लिए किसी भी देश के साथ सहयोग करेगा। हाल के वर्षों में, भारतीय डिप्लोमेसी ने कई महत्वपूर्ण संकेत दिए हैं कि हम ऐसा करने के लिए पूरी तरह तैयार हैं। प्रधानमंत्री मोदी ने इस बार पुतिन के बराबर खड़े होकर दोहराया, भारत संघर्ष में तटस्थ नहीं है-वह शांति के पक्ष में है।

●●●

विधेयक

आशीष कुमार 'अशु'

19 दिवसीय शीतकालीन सत्र आरम्भ हो चुका है जो आगामी 19 दिसम्बर तक चलेगा। इस दौरान कई विधेयक पास हुए और कुछ की पास होने की कार्यवाही चल रही है। इस आलेख में इन पर विस्तृत चर्चा की जा रही है।

संसद का शीतकालीन सत्र जारी

संसद का शीतकालीन सत्र विगत 1 दिसम्बर 2025 से शुरू हुआ जो आगामी 19 दिसम्बर 2025 तक चलेगा। कुल 19 दिन चलने वाले इस शीतकालीन सत्र में 15 बैठकें निर्धारित हैं। ज्ञातव्य हो कि सरकार ने सत्र शुरू होने से पहले सर्वदलीय बैठक बुलाई थी जिसमें 36 दलों के 50 नेता शामिल हुए थे। रक्षा मंत्री राजनाथ सिंह की अध्यक्षता वाली इस बैठक में सरकार ने सुचारू संचालन का आग्रह किया और कहा कि वह किसी भी मुद्दे पर चर्चा के लिए तैयार हैं। सत्र के पहले पांच दिन (1 से 5 दिसम्बर 2025 तक) में सदन की कार्यवाही मिली-जुली रही। शुरुआत के दो दिन हंगामेदार रहे, लेकिन तीसरा, चौथा और पांचवां दिन अपेक्षाकृत शांतिपूर्ण रहा। विपक्ष ने दिल्ली-एनसीआर प्रदूषण, इंडिगो संकट, गिग वर्कर्स की स्थिति, वक्फ पोर्टल रजिस्ट्रेशन, मणिपुर हिंसा जैसे मुद्दे उठाए, जबकि सरकार ने विधायी कार्यों पर फोकस रखा।

अब तक कितने और कौन-से विधेयक पास हुए इस पर एक दृष्टि

मणिपुर वस्तु एवं सेवा कर (दूसरा संशोधन) विधेयक, 2025

1दिसम्बर को ही लोकसभा से पास। यह मणिपुर में GST व्यवस्था में तकनीकी संशोधन करता है।

केंद्रीय उत्पाद शुल्क (संशोधन) विधेयक, 2025, 3 दिसम्बर को लोकसभा में पास, 4 दिसम्बर को राज्यसभा में चर्चा पूरी हुई और 5 दिसम्बर तक दोनों सदनों से पूर्ण मंजूरी मिल चुकी है। इस बिल के जरिए तम्बाकू उत्पादों (सिगरेट, बीड़ी,

जर्दा, खैनी, पान मसाला आदि) पर जीएसटी कम्पेंसेशन सेस खत्म होने के बाद भी मौजूदा कर-बोझ बनाए रखने के लिए नया उत्पाद शुल्क लगेगा।

वित्त मंत्री निर्मला सीतारमण ने स्पष्ट किया कि यह कोई 'नया टैक्स' नहीं है, बल्कि राजस्व में कमी को रोकने का उपाय है।

स्वास्थ्य सुरक्षा एवं राष्ट्रीय सुरक्षा उपकर विधेयक, 2025

5 दिसम्बर को लोकसभा से ध्वनिमत से पास हो गया जो कि राज्यसभा में अभी विचाराधीन है।

इस बिल के जरिए अवगुणकारी वस्तुओं (पान मसाला, तंबाकू युक्त उत्पाद, गुटखा आदि) पर अतिरिक्त उपकर लगेगा जिसका पैसा दो हिस्सों में जाएगा -

(क) सार्वजनिक स्वास्थ्य इंफ्रास्ट्रक्चर

(ख) राष्ट्रीय सुरक्षा (हाई-टेक हथियार, साइबर सिक्योरिटी, स्पेस एसेट्स आदि)।

वित्त मंत्री ने कारगिल युद्ध का उदाहरण देते हुए कहा कि तब हमारे पास केवल 70-80% हथियार थे। देश दोबारा उस स्थिति में नहीं जाना चाहता। विपक्ष ने इसे छिपा हुआ टैक्स बताया, लेकिन

बहुमत से बिल पास हो गया। इस प्रकार 5 दिसम्बर 2025 की शाम तक कुल तीन विधेयक दोनों सदनों से या कम से कम लोकसभा से पास हो चुके हैं।

आगे कौन-से प्रमुख विधेयक पास होने की प्रबल सम्भावना है?

सरकार ने सत्र में कुल 13 पुराने और 10 नए कुल 23 विधेयकों की सूची दी है। इनमें से प्रमुख हैं।

एटॉमिक एनर्जी (संशोधन) विधेयक, 2025 - पहली बार निजी कम्पनियों को न्यूक्लियर पावर प्लांट लगाने की अनुमति। मसौदा अंतिम चरण में है।

उच्च शिक्षा आयोग भारत विधेयक, 2025 - णऋउ, अखउढए, छउढए को खत्म कर एकल नियामक विधेयक बनेगा।

राष्ट्रीय राजमार्ग (संशोधन) विधेयक - भूमि अधिग्रहण तेज और पारदर्शी होगा।

कंपनी (संशोधन) विधेयक, 2025 तथा डङझ (संशोधन) - ईज ऑफ डूइंग बिजनेस को और आसान बनाएगा।

प्रतिभूति बाजार संहिता विधेयक, 2025 - सेबी एक्ट, डिपॉजिटरी एक्ट आदि को मिलाकर एक कोड बनेगा।

मध्यस्थता एवं सुलह (संशोधन) विधेयक, 2025 - कॉर्पोरेट विवादों का तेज निपटारा।

संविधान (131वां संशोधन) विधेयक - चंडीगढ़ को आर्टिकल 240 के तहत लाना।

इनमें से एटॉमिक एनर्जी बिल और उच्च शिक्षा आयोग बिल को सरकार प्राथमिकता दे रही है। यदि सदन सुचारू रूप से चला तो 8-10 और विधेयक पास हो सकते हैं।

सत्र के प्रमुख निष्कर्ष और निर्णय

स्वास्थ्य और रक्षा के लिए नया फंडिंग मॉडल तथा अवगुणकारी वस्तुएं सस्ती नहीं होंगी का सिद्धांत स्थापित हुआ। पान मसाला-गुटखा महंगा होगा, पैसा स्वास्थ्य और हाई-टेक रक्षा पर खर्च होगा।

तम्बाकू उत्पादों पर कर-बोझ बरकरार-जीएसटी कम्पेंसेशन सेस खत्म होने के बावजूद राजस्व नहीं गिरेगा। राज्यों को भी लाभ होगा।

विपक्ष की रणनीति आंशिक सफल- प्रदूषण, इंडिगो संकट, गिग वर्कर्स, वक्फ पोर्टल जैसे मुद्दे उठे, लेकिन सरकार ने विधायी कार्यों को प्राथमिकता दी। 9 दिसम्बर को चुनाव सुधार (ड्खठ) पर 10 घंटे और 8 दिसम्बर को वंदे मातरम पर 10 घंटे की चर्चा तय हुई है।

सोशल मीडिया पर बच्चों की सुरक्षा का मुद्दा - राज्यसभा में सुधा मूर्ति ने गम्भीर चिंता जताई और फ्रांस जैसे देशों की तरह कड़े नियम बनाने की मांग की। सरकार ने इसे गम्भीरता से लिया है।

शीतकालीन सत्र 2025 अब तक अपेक्षाकृत उत्पादक रहा है। पहले दो दिन हंगामे के बावजूद सरकार तीन महत्वपूर्ण आर्थिक-सुरक्षा विधेयक पास करा चुकी है। यदि अगले 10 कार्य दिवस भी इसी तरह शांतिपूर्ण रहे तो यह सत्र पिछले कई सत्रों की तुलना में सबसे अधिक विधायी उत्पादकता वाला सत्र बन सकता है।

स्वास्थ्य और राष्ट्रीय सुरक्षा को एक साथ जोड़कर नया उपकर लगाना इस सत्र का सबसे बड़ा और विवादास्पद निर्णय रहा। विपक्ष इसे 'छिपा टैक्स' कह रहा है, जबकि सरकार इसे 'दीर्घकालिक रणनीतिक फंडिंग' बता रही है। आने वाले दिनों में परमाणु क्षेत्र में निजी भागीदारी और उच्च शिक्षा में एकल नियामक जैसे ऐतिहासिक सुधार भी पास हो सकते हैं।

●●●

RERA NO.
P-IND-23-4209
Emerald
GARDENIA
The Iconic Address of Luxury
PREMIUM
RESIDENTIAL
PLOTS
Eco Gym
Cascade Waterfall
Luxury Club House
MultiPurpose Court
Badminton Court
Kids Play Zone
Cricket Nets
Palm Plaza
Embrace an
ICONIC
address!
Mayakhedi, Indore (M.P.)
+91-76106 76106

अपने सुख व आनंद के लिए कोई ऐसा कार्य करना जिससे हमें आर्थिक लाभ भले ही ना हो लेकिन संतुष्टि, तृप्ति, सुख व आनंद हो, जो निजी स्वार्थ से बहुत ऊपर होता है।

स्वान्तः सुखाय बहुजन हिताय

प्रो. शीला मिश्रा

नित्य की भांति सीमा अपनी मित्र विभा के योग सत्र में आ तो गई थी पर कुछ अनमनी सी थी। विभा ने कुछ चिंतित होकर पूछा 'बात क्या है, तबियत तो ठीक है न?' हां, ठीक है, पर सुबह-सुबह नींद खराब कर यहां आने से अच्छा है, कुछ देर और सो ही लिया करुं,' सीमा ने आखिर कह ही दिया।' ये क्या, योग सेहत के लिए कितना आवश्यक है और फिर योग की महत्ता तो आज सारी दुनिया स्वीकार कर रही है,' विभा ने आश्चर्य व्यक्त किया। 'क्या करूं, न तो वजन कम होता है न साइज, कल ही मोना कह रही थी, कोई अंतर तो दिखता ही नहीं, इतनी मेहनत से क्या लाभ?' सीमा दुखी होकर बोली, 'पर तू स्वस्थ तो है न? और तुझे यहां आना, योग करना अच्छा भी लगता है। सीमा ने थोड़ा प्रतिरोध किया, पर दूसरों को भी तो अंतर पता चलना चाहिए, नहीं तो क्या लाभ?' विभा बोली। 'प्यारी सखी, तू स्वस्थ है, खुश है, इसका दूसरों से क्या लेना-देना? मनुष्य का जीवन केवल दायित्वों अथवा धनोपार्जन से नहीं चलता, बल्कि कुछ कार्य ऐसे भी होते हैं जिन्हें करने का उद्देश्य केवल अपना आत्मिक सुख होता है जिसे हम स्वान्तः सुखाय कहते हैं।'

सीमा ने तनिक झल्लाहट से कहा, 'सुन विभा, मैं तो कहती हूं कि तू भी दूसरों के चक्कर में मुफ्त में क्यों अपना समय और ऊर्जा बर्बाद करती है? जिसे करना होगा करेगा, आखिर तुझे क्या पड़ी है? ऊपर से शाम होते ही झुग्गी-बस्ती में संगीत कार्यशाला? तेरे पास और कोई काम नहीं है क्या, आज-कल तो लोग घर बैठे कितना पैसा कमा रहे हैं, कुछ नहीं तो रील ही बना पर तू तो , वह भी बिना किसी लाभ के? आजकल सरकार भी ऐसे कार्यों के लिए बजट रखती है, तू उनके साथ ही कुछ कर, पैसा और नाम दोनों मिलेंगे अन्यथा जंगल में नाचा मोर किसने देखा?'

विभा समझ गई, 'अच्छा तो ये बात है सीमा, तू अपनी जगह ठीक है, 'आजकल तो लोग अपने स्वास्थ, घर-परिवार, मां-बाप लिए भी यूं ही कुछ नहीं करना चाहते और करें भी तो क्यों, न कोई एहसान न ही आर्थिक लाभ। थोड़ी प्रशंसा या सोशल मीडिया पर कुछ लाइक्स में भी लोग कंजूसी करते हैं? है न, लेकिन थोड़ा अपने आस-पास गौर कर, इतनी भागमभाग, रुपए-पैसे , मान- सम्मान, पद-प्रतिष्ठा, प्रचार -प्रसार, सुख-सुविधा के बाद भी सफल और समृद्ध लगने वाले लोगों के जीवन में एक खालीपन, एक अकेलापन सा स्पष्ट दिखता है, सब अपनी-अपनी दौड़ में अपनों को कहीं पीछे छोड़ते जा रहे हैं, शांति नहीं है। पैसा, घर, गाड़ी, बंगला इत्यादि न तो तुम्हें आत्मिक सुख देते है न शांति, जिसकी हमें खोज है?

समाज में हर तरह से सफल कहे जाने वाले वैज्ञानिक, अभिनेता, संगीतकार, लेखक, प्रशासक जैसी हस्तियां भी कई बार अपने एकाकीपन से इतनी दुखी हो जाती हैं कि तमाम भौतिक सफलता, प्रसिद्धि या उपलब्धियां भी उन्हें आत्महत्या जैसे घातक कदम से रोक नहीं पाती हैं। सच्चा सुख वही है जो स्थाई हो, जीवन को सार्थकता और शांति दे तथा बाह्य परिस्थितियों के प्रभाव से मुक्त हो परंतु भौतिकतावादी जीवन की आपाधापी में लगभग सभी कार्य काम, क्रोध, लोभ, मोह, मद एवं मात्सर्य जैसे रिपु को बढ़ाते ही हैं और हमारी सुख-शांति छीन लेते हैं। हम किसी न किसी अपेक्षा में ही कार्य करते हैं, अपनी विशिष्ट देहयष्टि के लिए लोग योग करना चाहते है, न कि इसलिए

कि उन्हें स्वयं इसको करने में खुशी मिलती है, यह तो मानसिक दासता ही हुई न?

आधुनिक युग की समस्या है कि व्यक्ति किसी कार्य को करने के पहले यह पूछता है कि इससे मेरा क्या (आर्थिक) लाभ होगा, मैं इस कार्य को क्यों करुं? तो स्वान्तः सुखाय कार्य अर्थात् अपनी आत्मा की संतुष्टि के लिए किए गए कार्य और उसके महत्व को समझो, कुछ कार्य ऐसे भी होते हैं जिन्हें करने का उद्देश्य केवल अपना आत्मिक सुख होता है जिससे हमें प्रसन्नता, शांति और रचनात्मक तृप्ति तो मिलती ही है, उसका आनंद भी गहरा होता है, जिसकी तुलना में आर्थिक लाभ अत्यंत तुच्छ हो जाता है। ऐसा कर्म उत्कृष्ट कोटि का तो होता ही है, उसके परिणाम भी अद्भुत और कल्याणकारी होते हैं। ऐसा मनपसंद कार्य अपने आप में पारितोषिक है, परिणाम चाहे कुछ भी हो, इसका अपना अलग ही आनंद है। इसकी तृप्ति गहरी और दीर्घकालिक होती है। स्वयं की इच्छा से किए जाने के कारण यह कार्य संतोषप्रद होने के साथ जीवन में संतुलन और सुख का आधार भी होता है। ऐसे कार्य शरीर, मन-बुद्धि एवं आत्मा में सामंजस्य स्थापित कर स्वयं के साथ जुड़ने का अवसर देते हैं जो कि योग का मूल है। परिणाम की अपेक्षा न होने के कारण ऐसा कार्य कर्मयोग तुल्य हो जाता है और मुक्ति का द्वार खोलता है, स्वयं भगवान् श्रीकृष्ण कहते हैं :

कर्मण्येवाधिकारस्ते मा फलेषु कदाचन।मा कर्मफलहेतुर्भूर्मा ते सङ्गोऽस्त्वकर्मणि।। (भगवद्गीता)

कालजयी अद्भुत कृति श्री रामचरित मानस, जिसकी रचना गोस्वामी तुलसीदास जी ने स्वान्तः सुखाय की जिसने मर्यादा पुरुषोत्तम श्रीराम को जन-जन के हृदय में स्थापित कर एक आदर्श समाज और राम राज्य का स्वर्णिम मापदंड युगों-युगों के लिए स्थापित कर दिया। यह कार्य सभी के जीवन पर सकारात्मक प्रभाव डालते हैं। ऐसा कार्य आत्मकल्याण के साथ लोककल्याण भी करता है। स्वान्तः सुखाय कार्यों ने ही विश्व को आदि शंकराचार्य जैसे अद्वैत वेदांत के दार्शनिक, गौतम बुद्ध, महावीर, रामकृष्ण परमहंस, स्वामी विवेकानंद जैसे आध्यात्मिक गुरु, सावित्री जैसा महाकाव्य देने वाले अरबिंदो लियोनार्डो दा विंची जैसे कलाकार, विलियम शेक्सपियर जैसे नाटककार, रवींद्रनाथ टैगोर जैसे साहित्यकार. मैरी क्यूरी जैसी वैज्ञानिक प्रदान किया है। मैं भी योग, संगीत, समाज सेवा इत्यादि स्वान्तः सुखाय ही करती हूं। सीमा: 'समझ गई बहन, तू स्वान्तः सुखाय योग करा और मैं स्वान्तः सुखाय योग करती हूं, इससे पहले कि मेरा जाने का समय हो जाए।' दोनों सहेलियां खिलखिलाकर हंस पड़ी।

●●●

आपकी आवाज को बुलंद करने वाली
सम्पूर्ण पारिवारिक व सामाजिक मासिक पत्रिका

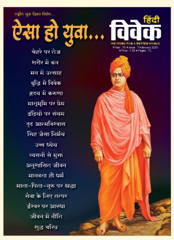

हिंदी विवेक
" We Work For A Better World"

सदस्यता शुल्क

- वार्षिक मूल्य : रु. 500/-
- त्रैवार्षिक मूल्य : रु. 1,200/-
- पंचवार्षिक मूल्य : रु. 1,800/-
- संरक्षक मूल्य : रु. 20,000/-
- विदेशी सदस्यता शुल्क वार्षिक : रु. 5,000/-

खुद ग्राहक बनें व बनाएं

- जन्म दिन तथा अन्य समारोहों में हिंदी विवेक उपहार के रूप में भेंट करें।
- मित्रों, रिश्तेदारों तथा शुभचिंतकों को हिंदी विवेक की सदस्यता प्रदान करें।
- अपने दिवंगत स्नेहीजनों की स्मृति में 11, 21, 51 या 101 पाठकों को सदस्यता दें।
- विवाह के अवसर पर सदस्यता उपहार में दें।
- नववर्ष की शुभकामना के रूप में ग्रीटिंग कार्ड के स्थान पर हिंदी विवेक का सदस्यता रसीद प्रदान करें।

UPI पेमेंट गेटवे के लिए QR कोड स्कैन करें और मैसेज बॉक्स में अपना नाम, पता व सम्पर्क नम्बर दर्ज करें।

हिंदी विवेक कार्यालय
प्लॉट नम्बर 7, आरएससी रोड नम्बर 10, सेक्टर - 2, श्रीकृष्ण बिल्डिंग के पीछे, हनुमान मंदिर बस स्टॉप के समीप, चारकोप, कांदिवली (पश्चिम), मुंबई - 400067
सम्पर्क : +91 95949 91884
hindivivekvargani@gmail.com / hindivivekadvt@gmail.com

यौवन की चौखट पर पहुंचने के बाद हर किसी का सपना होता है शादी-विवाह कर घर बसाने का। लेकिन चीनी युवाओं का सपना जब अपने देशों में टूटता दिखाई दे रहा है तो ऐसे में वो अपने लिए दुल्हन की खोज पाकिस्तान व बांग्लादेश में जाकर कर रहे हैं।

दुल्हन ढूंढते चीनी युवा

चीन में 1970 के दशक में एक-बच्चे की पॉलिसी ने युवाओं के सामने चिंता की लकीर खींच दी है। विदित हो कि यह नीति चीन में जनसंख्या नियंत्रण और आर्थिक विकास के लिए लागू की गई थी, लेकिन अब यह नीति चीनी के लिए रोड़ा बन गई है। चीन में बड़ी संख्या में कन्या भ्रूण हत्या की गई थी, जिसके कारण वहां लड़कियों की संख्या में जबरदस्त कमी आई थी। चीन में जनसंख्या असंतुलन के कारण चीनी युवाओं को शादी के लिए लड़कियां नहीं मिल पा रही हैं। विदित हो कि चीन में महिलाओं की संख्या बेहद कम है। सूत्रों से मिली जानकारी के अनुसार चीनी युवा पाकिस्तान और बांग्लादेश की महिलाओं से शादी कर रहे हैं। इन देशों की गरीब महिलाएं बेहतर जिंदगी के लालच में शादी के लिए तैयार हो जाती हैं। चीनी पुरुष जिन देशों में दुल्हन की खोज में जा रहे हैं, उनमें पाकिस्तान और बांग्लादेश का नाम सबसे ऊपर है। इन देशों के चीन के साथ मैत्रीपूर्ण सम्बंध हैं। साथ ही इन देशों में गरीबी है और लड़की की शादी एक बड़े खर्च का काम है। ये सभी कारण पाकिस्तान और बांग्लादेश को चीनी पुरुषों के लिए दुल्हन का बड़ा 'बाजार' बना रहे हैं।

बताया जाता है कि पाकिस्तानी लड़कियों के चीनी पुरुषों से शादी करने की बात पहली बार 2019 में सामने आई, जब पाकिस्तान की जांच एजेंसी ने इंटरनेशनल वेश्यावृत्ति गिरोह का भंडाफोड़ किया। ये गिरोह युवा पाकिस्तानी महिलाओं की चीन में तस्करी कर रहा था। गिरोह शादी की बात कहकर पाकिस्तानी महिलाओं को चीन भेजता था लेकिन वहां इनको कई तरह की मुश्किलों का सामना करना पड़ता था। चीनी दुल्हन की तस्करी के ऐसे मामले केवल पाकिस्तान तक ही सीमित नहीं हैं। यह लाओस, उत्तर कोरिया, वियतनाम, म्यांमार, बांग्लादेश और कंबोडिया में भी हुआ है। हालांकि इसे बड़े पैमाने पर पाकिस्तान और बांग्लादेश में देखा गया है। इसी साल मई में ढाका स्थित चीनी दूतावास ने अपने नागरिकों को स्थानीय महिलाओं से शादी करने से बचने की चेतावनी दी थी।

पाकिस्तान में खासतौर से गैर-कानूनी मैरिज सेंटर ईसाई परिवारों को धोखा देते हैं। चीनी पुरुषों को अमीर धर्म बदलने वाले के तौर पर दिखाया जाता है। चीन पहुंचने के बाद कई महिलाओं को वेश्वावृत्ति या मानव अंगों के व्यापार में धकेल दिया जाता है। चीनी नागरिक पाकिस्तान में आसानी से वीजा पा जाते हैं। इससे भी उनके लिए यहां लड़कियां खोजना आसान हो जाता है।

●●●

सोनम लववंशी

क्या आप भी करियर को लेकर आशंकित हैं? तो अधिक सोचने की आवश्यकता नहीं है। आप कृषि क्षेत्र में भी अपना भविष्य संवार सकते हैं क्योंकि एग्रीकल्चर आज के युवाओं के लिए भविष्य का सबसे स्थिर, सुरक्षित, सम्मानजनक और अवसरों से भरा करियर बन चुका है।

कृषि ने स्मार्ट टेक्नोलॉजी, आर्टिफिशियल इंटेलिजेंस, ग्लोबल ट्रेड, फूड प्रोसेसिंग, सप्लाई चेन, एनवायरनमेंट मैनेजमेंट और स्टार्टअप इनोवेशन के साथ मिलकर खुद को नए रूप में ढाला है। यही कारण है कि आज कृषि सिर्फ ग्रामीण युवाओं तक सीमित नहीं, बल्कि शहरों के लाखों युवा भी इसे करियर की मजबूत दिशा के रूप में अपनाने लगे हैं।

कृषि को करियर के रूप में अपनाने का सबसे बड़ा कारण यह है कि यह क्षेत्र आज भी अधिक स्थिरता देता है। जब पूरी दुनिया आर्थिक मंदी से जूझती है, तब भी खाद्य उत्पादन और उससे जुड़ी इंडस्ट्री कभी नहीं रुकती। दुनिया की बढ़ती जनसंख्या और बदलते जलवायु संकट के बीच खाद्य आवश्यकताएं तेजी से बढ़ रही हैं, जिसके चलते प्रशिक्षित कृषि प्रोफेशनल्स की मांग आज पहले से कहीं अधिक है। अगर कोई छात्र अपने करियर को संवेदनशीलता, विज्ञान और स्थायी भविष्य की दिशा में मोड़ना चाहता है, तो कृषि क्षेत्र उसके लिए सबसे उपयुक्त विकल्पों में से एक है।

भारत में कृषि का दायरा इतना व्यापक है कि यहां सामान्य बी.एस.सी कृषि से लेकर हाई-टेक कृषि इंजीनियरिंग, प्लांट जेनेटिक्स, हॉर्टिकल्चर, डेयरी साइंस, फूड टेक्नोलॉजी, फॉरेस्ट्री, फिशरीज, एग्री-बिज़नेस मैनेजमेंट, सॉयल साइंस, एग्री-बायोटेक, पोस्ट-हार्वेस्ट टेक्नोलॉजी, एग्री-डेटा साइंस और स्मार्ट फार्मिंग जैसे अनगिनत विकल्प मौजूद हैं। एक युवा की रुचि चाहे वैज्ञानिक अनुसंधान में हो, तकनीक में, मैकेनिकल इंजीनियरिंग में, बिजनेस में या उद्यमिता में, कृषि हर क्षेत्र में अवसर उपलब्ध कराती है। उदाहरण के तौर पर, आज ड्रोन मैपिंग, सैटेलाइट इमेजिंग, स्मार्ट सिंचाई, सॉइल हेल्थ कार्ड, फसल अनुमान और एग्री-लॉजिस्टिक्स में विशेषज्ञ युवाओं की बहुत मांग है। इसी तरह, फूड प्रोसेसिंग और पैकेजिंग इंडस्ट्री भारत की सबसे तेजी से बढ़ती हुई इंडस्ट्री है, जो आने वाले वर्षों में लाखों

कृषि में संवारे भविष्य

नौकरियां देने वाली है।

अगर कोई छात्र पूछता है कि कृषि की दिशा में करियर कैसे मोड़ा जाए, तो पहला कदम है अपनी रुचि और योग्यता को समझना। यदि छात्र 12वीं विज्ञान से कर रहा है, विशेषकर बायोलॉजी या कृषि विषय के साथ, तो वह सीधे बी.एससी कृषि, बी.एससी हॉर्टिकल्चर, बी.एससी फॉरेस्ट्री, बी.एससी फिशरीज, बी.टेक कृषि इंजीनियरिंग या बी.टेक फूड टेक्नोलॉजी जैसे कोर्स में प्रवेश ले सकता है। ये स्नातक कोर्स एक मजबूत आधार देते हैं और बाद में विशेषज्ञता हासिल करने के अनेक विकल्प खुल जाते हैं। वहीं यदि छात्र पहले से स्नातक कर चुका है, तो उसके पास एम.एससी कृषि, एम.टेक कृषि इंजीनियरिंग, एमबीए एग्री-बिज़नेस मैनेजमेंट, पीजी डिप्लोमा इन एग्री-एंटरप्रेन्योरशिप, एम.एससी फूड प्रोसेसिंग, रिमोट सेंसिंग एंड जीआईएस, एग्री-इंपोर्ट/एक्सपोर्ट मैनेजमेंट जैसे उन्नत कोर्स उपलब्ध हैं, जिनके बाद नौकरी के अवसर गुणात्मक रूप से बढ़ जाते हैं।

कृषि का सबसे मजबूत पहलू यह है कि इसमें सरकारी, निजी और स्वयं का व्यवसाय हर स्तर पर सम्भावनाएं हैं। सरकारी नौकरियों में कृषि विस्तार अधिकारी, कृषि अधिकारी, कृषि वैज्ञानिक, खाद्य सुरक्षा अधिकारी, कृषि फील्ड ऑफिसर (बैंकिंग सेक्टर), कृषि मंत्रालय जैसे पद उपलब्ध हैं। ये पद न केवल स्थिरता और सम्मान प्रदान करते हैं, बल्कि समाज में वास्तविक परिवर्तन लाने का अवसर भी देते हैं। निजी क्षेत्र में बीज कम्पनियां, उर्वरक कम्पनियां, बायोटेक लैब्स, फूड प्रोसेसिंग यूनिट्स, कोल्ड-चेन कम्पनियां, एग्री-टेक स्टार्टअप्स और बड़ी रिटेल कम्पनियां युवाओं को आकर्षक पैकेज के साथ नौकरियां दे रही हैं। सबसे बड़ा आकर्षण कृषि-स्टार्टअप्स का तेज उभार है। आज भारत में 3 हजार से अधिक एग्री-स्टार्टअप्स सक्रिय हैं कोई ड्रोन मैपिंग कर रहा है, कोई फार्म-टू-फोर्क प्लेटफॉर्म बना रहा है, कोई जैविक उत्पाद, पौध रोपण सामग्री या फसल सलाह सेवाएं दे रहा है। सरकार भी कृषि में नए उद्यमियों को आर्थिक सहायता प्रदान कर रही है, जैसे एग्री-क्लस्टर डेवलपमेंट, कृषि इंफ्रास्ट्रक्चर फंड, स्टार्टअप इंडिया सीड फंड और किसान ड्रोन योजना। यही कारण है कि युवा अब खेतों को सिर्फ उत्पादन का केंद्र नहीं, बल्कि अवसरों की प्रयोगशाला के रूप में देखने लगे हैं।

कृषि शिक्षा के लिए भारत में कई प्रतिष्ठित विश्वविद्यालय उपलब्ध हैं। इनमें आईसीआर के अंतर्गत आने वाले संस्थान सर्वोच्च माने जाते हैं। आईएआरआई नई दिल्ली को तो कृषि शिक्षा का एमआईटी कहा जाता है। इसके अलावा पंतनगर कृषि विश्वविद्यालय, पंजाब कृषि यूनिवर्सिटी लुधियाना, टीएनएयू कोयंबटूर, बीएचयू वाराणसी का कृषि संकाय, राजेंद्र प्रसाद केंद्रीय कृषि विश्वविद्यालय पूसा, यूएस बेंगलुरु जैसे विश्वविद्यालय उच्चस्तरीय शिक्षा प्रदान करते हैं। निजी विश्वविद्यालयों में एमिटी, एलपीयू और चंडीगढ़ यूनिवर्सिटी भी गुणवत्तापूर्ण कृषि शिक्षा उपलब्ध कराते हैं।

करियर बनाने के लिए कौशल भी बहुत महत्व रखता हैं। आधुनिक कृषि केवल परम्परा पर नहीं चलती, इसमें वैज्ञानिक सोच, डेटा एनालिसिस, एग्री-टेक टूल्स का ज्ञान, बिजनेस समझ, संचार कौशल, पर्यावरण संवेदनशीलता और समस्या समाधान

क्षमता बेहद आवश्यक है। जो युवा नई तकनीकों को अपनाने के लिए तैयार हैं, वे तेजी से आगे बढ़ेंगे। कृषि का भविष्य बेहद उज्ज्वल है। आने वाले वर्षों में एआई आधारित खेती, क्लाइमेट-रेजिलिएंट फसलें, डिजिटल मंडियां, स्मार्ट वेयरहाउस, फूड प्रोसेसिंग इकोनॉमी और कृषि-निर्यात भारत को नए स्तर पर ले जाएंगे। दुनिया में यह चर्चा है कि 2035 तक कृषि क्षेत्र में तकनीकी नवाचारों के कारण रोजगार और अवसर दोनों तेजी से बढ़ेंगे। ऐसे में उन युवाओं की मांग अत्यधिक होगी जो खेत से लेकर खाद्य उद्योग तक हर स्तर पर तकनीक, प्रबंधन और कृषि विज्ञान को समझते हों।

●●●

50+ YEARS OF MOMENTUM
अर्थ सहकारेण कल्याणम्
दि कल्याण जनता सहकारी बँक लि.
मल्टी-स्टेट शेड्युल्ड बँक
सोने तारण कर्ज
जलद कर्ज
कमी प्रक्रिया शुल्क
व्याजदर
९.५०%* वार्षिक
* अटी व शर्ती लागू
TOLL FREE: 1800 233 1919
kalyanjanata.in
KJSBank

पर्यटन

विंटर टूरिज्म में आनंद, रोमांच व अवसर

निहारिका पोल सर्वटे

आपको भी पर्यटन पसंद है और आप इसके लिए गर्मियों के अवकाश की प्रतीक्षा करते हैं तो जरा ठहरिए! आप विंटर टूरिज्म का आनंद ले सकते हैं साथ ही साथ आप प्रकृति की असीम सौंदर्य को निहार सकते हैं जिसका दृश्य आपको रोमांचित कर सकता है।

सर्दियों का मौसम आते ही बस याद आता है, गर्म चाय, स्वेटर और बाहर निकलकर बर्फ में खेलना। भारत में अब विंटर टूरिज्म यानी सर्दियों में की जाने वाली ट्रैवलिंग प्रत्येक साल तेजी से लोकप्रिय हो रही है। हिमाचल प्रदेश और उत्तराखंड के हिल स्टेशन हों या राजस्थान और गुजरात के रेगिस्तानी क्षेत्र, लोग ठंडी हवाओं में रोमांच और आराम दोनों के लिए निकल पड़ते हैं लेकिन विंटर टूरिज्म केवल छुट्टियों का आनंद नहीं बल्कि स्थानीय लोगों के रोजगार, छोटे व्यवसायों और पूरे देश की अर्थव्यवस्था को बढ़ावा भी दे रहा है।

क्यों है विंटर टूरिज्म इतना विशेष

पहली बात तो यह कि सर्दियों में प्रकृति अपना सौंदर्य बिखेरती है। हिमालय की बर्फ से ढकी चोटियां, पहाड़ों के बीच झरने और ठंडी हवाओं के साथ सुबह की धूप, इससे बड़ा आराम और रोमांच शायद ही कहीं और मिले।

एडवेंचर को पसंद करने वालों के लिए स्कीइंग, ट्रेकिंग, स्नोबोर्डिंग और कैंपिंग जैसे विकल्प भी हैं। अगर आप सोच रहे हैं कि मैं बर्फ में कैसे जाऊंगा?, तो घबराइए मत! प्रोफेशनल गाइड्स प्रत्येक जगह उपस्थित हैं। और तो और परिवार वाले भी एक अलग आनंद का अनुभव करते हैं। जिनमें बर्फ में स्नोमैन बनाना, ठंडी रातों में हॉट चॉकलेट पीना और पहाड़ों के बीच आरामदायक होमस्टे का अनुभव।

भविष्य की सम्भावनाएं

भारत में विंटर टूरिज्म की मांग प्रत्येक साल बढ़ रही है। सोशल मीडिया पर हिल स्टेशन और ठंडी जगहों की फोटो वायरल हो रही हैं, लोग अब केवल गर्मियों में ही ट्रिप नहीं प्लान करते बल्कि सर्दियों में भी पर्यटन का भरपूर आनंद लेते हैं।

नए पर्यटन स्थलः हिमाचल, उत्तराखंड और जम्मू-कश्मीर के अलावा सिक्किम, लद्दाख और अरुणाचल प्रदेश जैसे नए स्थलों में विंटर टूरिज्म के अवसर बढ़ रहे हैं।

एडवेंचर टूरिज्म का विस्तारः स्कीइंग, ट्रेकिंग, बर्फ के खेल और कैंपिंग पर्यटकों को नया रोमांच देते हैं।

लोकल हेरिटेज और त्यौहारः स्थानीय मेलों और हस्तशिल्प के कारण मजेदार और सांस्कृतिक भी बन जाता है।

यह साफ दिखाई देता है कि विंटर टूरिज्म केवल मस्ती नहीं, बल्कि आर्थिक अवसर भी ला रहा है।

आर्थिक रूप से सशक्त बनने के रास्ते

विंटर टूरिज्म केवल ट्रिप और एडवेंचर नहीं, यह स्थानीय और राष्ट्रीय अर्थव्यवस्था को भी मजबूत कर सकता है।

स्थानीय रोजगारः होटल, होमस्टे, कैब सेवाएं और गाइडिंग, सबके लिए रोजगार उपलब्ध करा सकता है। यह विशेषकर स्थानीय युवाओं और महिलाओं के लिए रोजगार का अच्छा अवसर है।

स्थानीय उत्पादों की बिक्रीः हस्तशिल्प, सर्दियों के कपड़े, स्थानीय खाद्य पदार्थ और स्मृति चिन्ह की बिक्री से आर्थिक रुप से मजबूत बनने में सहायता मिल सकती है।

सरकारी राजस्वः टैक्स और

टूरिज्म फीस से राज्य और केंद्र सरकार को आर्थिक लाभ मिल सकता है जो देश के आर्थिक विकास में अपनी महत्वपूर्ण भूमिका निभा सकता है।

इंफ्रास्ट्रक्चरः विंटर टूरिज्म से सड़क, यातायात, सुरक्षा और स्वास्थ्य सुविधाओं में सुधार की सम्भावना बढ़ जाती है।

लाभः पर्यटक, लोकल और देश

भारत में विंटर टूरिज्म केवल ट्रिप का मजा नहीं है। यह रोजगार, सांस्कृतिक संरक्षण और आर्थिक अवसर का भी बड़ा जरिया है। हिमालय की चोटियां, पहाड़ी हिल स्टेशन, रेगिस्तानी रातें और सांस्कृतिक त्योहार, ये सभी भारत को एक वैश्विक पर्यटन स्थल के रूप में स्थापित करने में सहायता कर रहे हैं। सर्दियों का आनंद केवल चाय और स्वेटर में नहीं, बल्कि बर्फ में रोमांच और स्थानीय संस्कृति में खो जाने में है। अगले साल, जब आप सर्दियों की छुट्टियों का प्लान करें, तो केवल आनंद के लिए नहीं, बल्कि एक स्थानीय और राष्ट्रीय अर्थव्यवस्था को भी सपोर्ट करने के लिए जाएं। याद रखिए, भारत में सर्दियों की सैर केवल अवकाश नहीं, बल्कि अनुभव, रोमांच और विकास का एक पूरा पैकेज है। सर्दियों में यात्रा केवल बर्फ और पहाड़ों का आनंद नहीं, बल्कि नए अनुभव, नई यादें और जीवन के छोटे-छोटे रोमांच की यात्रा भी है। भारत का विंटर टूरिज्म हमें यह दिखाता है कि कैसे प्राकृतिक सुंदरता, सांस्कृतिक विरासत और स्थानीय समुदाय एक साथ मिलकर हमारे अनुभव को समृद्ध बना सकते हैं। अगली बार जब आप सर्दियों में बाहर निकलें, तो केवल फोटो लेने या मजे करने के लिए नहीं, बल्कि इस यात्रा का हर पहलू अनुभव करने के लिए जाएं, क्योंकि यही असली सर्दियों की यात्रा है।

जब हम पर्यावरण का ध्यान रखते हुए, स्थानीय लोगों का समर्थन करते हुए और रोमांच का अनुभव लेते हैं, तो यह ट्रिप केवल यादगार नहीं रह जाती बल्कि अर्थपूर्ण भी बन जाती है। सर्दियों में भारत की यात्रा करना मतलब है, आनंद, रोमांच और विकास का पूरा पैकेज अपने हाथों में लेना। ■■■

आपकी आवाज को बुलंद करने वाली
सम्पूर्ण पारिवारिक व सामाजिक मासिक पत्रिका

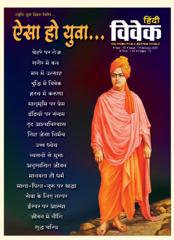

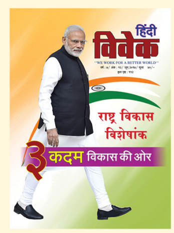

हिंदी विवेक
" We Work For A Better World"

सदस्यता शुल्क

- वार्षिक मूल्य : रु. 500/-
- त्रैवार्षिक मूल्य : रु. 1,200/-
- पंचवार्षिक मूल्य : रु. 1,800/-
- संरक्षक मूल्य : रु. 20,000/-
- विदेशी सदस्यता शुल्क वार्षिक : रु. 5,000/-

खुद ग्राहक बनें व बनाएं

- जन्म दिन तथा अन्य समारोहों में हिंदी विवेक उपहार के रूप में भेंट करें।
- मित्रों, रिश्तेदारों तथा शुभचिंतकों को हिंदी विवेक की सदस्यता प्रदान करें।
- अपने दिवंगत स्नेहीजनों की स्मृति में 11, 21, 51 या 101 पाठकों को सदस्यता दें।
- विवाह के अवसर पर सदस्यता उपहार में दें।
- नववर्ष की शुभकामना के रूप में ग्रीटिंग कार्ड के स्थान पर हिंदी विवेक का सदस्यता रसीद प्रदान करें।

UPI पेमेंट गेटवे के लिए QR कोड स्कैन करें और मैसेज बॉक्स में अपना नाम, पता व सम्पर्क नम्बर दर्ज करें।

हिंदी विवेक कार्यालय
प्लॉट नम्बर 7, आरएससी रोड नम्बर 10, सेक्टर - 2, श्रीकृष्ण बिल्डिंग के पीछे, हनुमान मंदिर बस स्टॉप के समीप, चारकोप, कांदिवली (पश्चिम), मुंबई - 400067
सम्पर्क : +91 95949 91884
hindivivekvargani@gmail.com / hindivivekadvt@gmail.com

सर्दी में ऐसे रहें चुस्त

डॉ. अनुराधा नरवणे

सर्दी के समय आप रजाई व कम्बल में ही दुबके रहना पसंद करते हैं। ऐसे में आप सुबह के सैर-सपाटे व योगाभ्यास से कोसों दूरी बना लेते हैं। जो आपके शरीर व स्वास्थ के लिए हानिकारक है। सर्दियों में आप कुछ योगाभ्यास करके चुस्त-दुरुस्त रह सकते हैं और इस मौसम में आपको गर्मी का अनुभव भी होगा।

सर्दियों में मनुष्य का बल सर्वोत्तम होता है तथा पाचन अग्नि भी तीव्र होती है। यही ऋतु है जिसमें व्यायाम अपनी शक्ति से अधिक करने का विधान है। अधिक व्यायाम से शरीर में ऊर्जा, गर्मी तथा प्रतिरोधक क्षमता की वृद्धि होती है।

चेतना व्यायाम

ठंड के कारण शरीर में कठोरता होती है। अतः 5/10 मिनट व्यायाम करने से पूर्व warm up करने से जोड़ों की अकड़न कम होती है।

तेज लय वाले व्यायाम

दौड़ना सर्वोत्तम व्यायाम है जिसमें हृदय तथा फुफ्फुसों की क्रियाशीलता व अंगों का स्वास्थ्य सुधार होता है। तेज गति से सैर व जॉगिंग आदि से शरीर में स्वाभाविक गर्मी उत्पन्न होती है।

भीतरी व्यायाम

अत्यधिक ठंड में घर से बाहर जाकर व्यायाम करना सम्भव नहीं हो पाता तब योग, रस्सी कूदना, नृत्य आदि व्यायाम के विकल्प हो सकते हैं।

नियमितता

ठंडे वातावरण से आलस्य की अनुभूति हो सकती है फिर भी 15/20 मिनट अवश्य व्यायाम करना चाहिए।

तीव्र गति के व्यायामों से श्वास प्रश्वास की गति बढ़ती है जो शरीर को भीतर से गर्मी की अनुभूति देती है।

योग्य प्रमाण में जल सेवन जो गुनगुना होना चाहिए पाचन के लिए उत्तम होता है। शीत ऋतु में उष्ण जल सेवन उत्तम रहता है।

लाभदायक योगाभ्यास

सूर्य नमस्कार

यह एक सर्वोत्तम व्यायाम तथा योग का सम्मिश्र रूप है। शरीर में सक्रियता के साथ साथ रक्त संचार में भी वृद्धि होती है। जिससे ऊर्जा उष्मा व जोड़ों की अकड़न कम होती है। प्रतिदिन प्रातः सूर्य नमस्कार करना लाभकारी है।

कपालभाति

योग की इस शुद्धि क्रिया से श्वास गति तेज होने से और पेट की मांसपेशियों की हलचल से पाचन सुधार आलस्य तथा ऊर्जा का संचार होता है।

भस्रिका

यह प्राणायाम शरीर में त्वरित ऊष्णता निर्माण करता है। नासिका में कफ को संचित नहीं होने देता। सर्दियों में उत्तम व्यायाम है।

उष्ट्रासन

वक्ष प्रदेश के पूर्ण फैलने से शरीर में लचीलापन लाता है।

त्रिकोणासन

मांसपेशियों की सक्रियता में वृद्धि से शीत ऋतु में उष्णता बढ़ाने में सहायक है।

मार्जारासन

मेरुदंड व सर्वांग लचीलापन प्राप्त होता है। ऐसी मान्यता है कि सर्दियों में किया गया व्यायाम वर्ष भर शरीर को स्वस्थ रखने में तथा रोग प्रतिरोधक क्षमता बढ़ाने में सहायक होता है। आहार और विहार भी यदि ऋतुनुसार किया जाए तो उत्तम स्वास्थ्य की प्राप्ति निश्चित है।

●●●

मधुकर दत्तात्रेय देवरस जिन्हें बालासाहब के नाम से भी जाना जाता है। ये समाज में फैली कुरीतियों व जाति प्रथा के घोर विरोधी थे। इन्होंने संघ कार्य में अनेक नए आयाम भी जोड़े।

कुरीतियों के घोर विरोधी बालासाहब देवरस

राष्ट्रीय स्वयंसेवक संघ की कार्यपद्धति के निर्माण एवं विकास में जिनकी प्रमुख भूमिका रही है, उन मधुकर दत्तात्रेय देवरस का जन्म 11 दिसम्बर, 1915 को नागपुर में हुआ था। वे बालासाहब के नाम से अधिक परिचित हैं। वे ही आगे चलकर संघ के तृतीय सरसंघचालक बनें।

बालासाहब ने 1927 में शाखा जाना शुरू किया। धीरे-धीरे उनका सम्पर्क डा0 हेडगेवार से बढ़ता गया। उन्हें मोहिते के बाड़े में लगने वाली सायं शाखा के 'कुश पथक' में शामिल किया गया। इसमें विशेष प्रतिभावान छात्रों को ही रखा जाता था। बालासाहब खेल में बहुत निपुण थे। कबड्डी में उन्हें विशेष मजा आता था पर वे सदा प्रथम श्रेणी पाकर उत्तीर्ण भी होते थे।

वे बचपन से ही खुले विचारों के थे। वे कुरीतियों तथा कालबाह्य हो चुकी परम्पराओं के घोर विरोधी थे। उनके घर पर उनके सभी जातियों के मित्र आते थे। वे सब एक साथ खाते-पीते थे। प्रारम्भ में उनकी माताजी ने इस पर आपत्ति जताई पर बालासाहब के आग्रह पर वे मान गईं।

कानून की पढ़ाई पूरी कर उन्होंने नागपुर के 'अनाथ विद्यार्थी वसतिगृह' में 2 वर्ष अध्यापन किया। इन दिनों वे नागपुर के नगर कार्यवाह रहे। 1939 में वे प्रचारक बने, तो उन्हें कोलकाता भेजा गया पर 1940 में डा. हेडगेवार के देहांत के बाद उन्हें वापस नागपुर बुला लिया गया। 1948 में जब गांधी हत्या का झूठा आरोप लगाकर संघ पर प्रतिबंध लगाया गया, तो उसके विरुद्ध सत्याग्रह के संचालन तथा फिर समाज के अनेक प्रतिष्ठित लोगों से सम्पर्क कर उनके माध्यम से प्रतिबंध निरस्त कराने में बालासाहब की प्रमुख भूमिका रही।

1940 के बाद लगभग 30-32 साल तक उनकी गतिविधियों का केंद्र मुख्यतः नागपुर ही रहा। इस दौरान उन्होंने नागपुर के काम को आदर्श रूप में खड़ा किया। देश भर के संघ शिक्षा वर्गों में नागपुर से शिक्षक जाते थे। नागपुर से निकले प्रचारकों ने देश के हर प्रांत में जाकर संघ कार्य खड़ा किया।

1965 में वे सरकार्यवाह बनें। शाखा पर होने वाले गणगीत, प्रश्नोत्तर आदि उन्होंने ही शुरू कराए। संघ के कार्यक्रमों में डॉ. हेडगेवार तथा श्री गुरुजी के चित्र लगते हैं। बालासाहब के सरसंघचालक बनने पर कुछ लोग उनका चित्र भी लगाने लगे पर उन्होंने इसे रोक दिया। यह उनकी प्रसिद्धि से दूर रहने की वृत्ति का ज्वलंत उदाहरण है।

1973 में श्रीगुरुजी के देहांत के बाद वे सरसंघचालक बने। 1975 में संघ पर लगे प्रतिबंध का सामना उन्होंने धैर्य से किया। वे आपातकाल के पूरे समय पुणे की जेल में रहे पर सत्याग्रह और फिर चुनाव के माध्यम से देश को इंदिरा गांधी की तानाशाही से मुक्त कराने की इस चुनौती में संघ सफल हुआ।इस दौरान उन्होंने संघ कार्य में अनेक नये आयाम जोड़े। इनमें सबसे महत्वपूर्ण निर्धन बस्तियों में चलने वाले सेवा के कार्य हैं। इससे वहां चल रही धर्मांतरण की प्रक्रिया पर रोक लगी। स्वयंसेवकों द्वारा प्रांतीय स्तर पर अनेक संगठनों की स्थापना की गई थी। बालासाहब ने वरिष्ठ प्रचारक देकर उन सबको अखिल भारतीय रूप दे दिया। मीनाक्षीपुरम् कांड के बाद एकात्मता यात्रा तथा फिर श्रीराम मंदिर आंदोलन के दौरान हिंदू शक्ति का जो भव्य रूप प्रकट हुआ, उसमें इन सब संगठनों के काम और प्रभाव की व्यापक भूमिका है।

जब उनका शरीर प्रवास योग्य नहीं रहा, तो उन्होंने प्रमुख कार्यकर्ताओं से परामर्श कर यह दायित्व रज्जू भैया को सौंप दिया। 17 जून, 1996 को उन्होंने अंतिम सांस ली। उनकी इच्छानुसार उनका दाहसंस्कार रेशीमबाग की बजाय नागपुर में सामान्य नागरिकों के श्मशान घाट में किया गया।

•••

कर्नाटक के उडुपी नगर में राज्य स्तरीय सम्मेलन 13 और 14 दिसम्बर, 1969 को हुआ। उक्त सम्मेलन में गुरुजी ने कहा कि पहले हमें अपना आचरण ठीक करना होगा, तब ही हम समाज में एकता स्थापित कर सकेंगे।

उडुपी में हिंदू सम्मेलन और श्री गुरुजी

देश एवं दुनिया के हिंदुओं को जागरूक एवं संगठित करने के लिए 29 अगस्त, 1964 को विश्व हिंदू परिषद की स्थापना हुई। स्थापना के बाद प्रयागराज में कुम्भ के अवसर पर 1966 तथा 1979 में पहला और दूसरा विश्व हिंदू सम्मेलन हुआ। इसके साथ ही अनेक सम्मेलन प्रांत और क्षेत्र के अनुसार भी हुए। इन सबसे हिंदू समाज में अपार उत्साह का संचार हुआ।

ऐसा ही एक राज्य स्तरीय सम्मेलन 13 और 14 दिसम्बर, 1969 को कर्नाटक के उडुपी नगर में हुआ। किसी समय यहां घना जंगल था। दक्ष के श्राप से कांतिविहीन हुए चंद्रमा ने कांति पाने के लिए यहां घोर तपस्या की थी। इसलिए यह 'अब्जारण्य' अर्थात चंद्रमा का वन कहलाया। चंद्रमा को कन्नड़ में नक्षत्रों का स्वामी (उडु-पा) कहते हैं। यहां चंद्रमा ने चंद्रेश्वर लिंग की स्थापना की थी। उडु-पा को धारण करने से यहां के भगवान उडुप्पी कहलाए। इसीलिए यहां श्रीकृष्ण की पूजा से पूर्व चंद्रेश्वर की पूजा होती है। इसका एक नाम 'रजतपीठपुर' भी है। यहां का कुछ सम्बंध महाभारत युद्ध से भी है।

एक अन्य लोककथा के अनुसार किसी समय यहां केवल सर्प ही रहते थे पर एक संत ने उन्हें एक मैदान में रहने के लिए बाध्य कर दिया। लेकिन कालक्रम में नगर फैलते हुए मैदान तक आ गया। इस मैदान में ही हिंदू सम्मेलन होना था। जब मजदूरों ने काम शुरू किया तो बड़ी संख्या में सर्प आ गए। इस पर कुछ विशेष पूजा आदि की गई, इससे वे चले गये। बीच में एक-दो बार वे दिखाई तो दिए पर उन्होंने किसी को नुकसान नहीं पहुंचाया।

इस सम्मेलन में 2,500 गांवों के 15,000 प्रतिनिधि शामिल हुए। कर्नाटक तथा अन्य दक्षिणी राज्यों के प्रमुख संतों के साथ संघ के तत्कालीन प. पू. सरसंघचालक श्रीगुरुजी भी पूरे समय उपस्थित रहे। श्री गुरुजी ने सम्मेलन का उद्घाटन करते हुए कहा कि यह समय उपदेश का नहीं बल्कि आचरण का है। कहावत है कि जैसा बोएंगे, वैसा ही काटेंगे। अतः पहले हमें अपना आचरण ठीक करना होगा, तब ही हम समाज में एकता स्थापित कर सकेंगे। सम्मेलन में कॉलेज शिक्षक, धर्मगुरु, महिला, कॉफी बागान के मालिक तथा उद्योगपतियों के अलग सत्र भी हुए। श्रीगुरुजी इन सभी सत्रों में स्वयं उपस्थित रहे।

इस सम्मेलन में हिंदू धर्म के अंतर्गत सभी मत, पंथ और सम्प्रदायों के प्रमुख संत पधारे। श्रीगुरुजी ने कहा कि संत हाथीदांत की तरह शोभा की वस्तु न बनें। यदि वे अपने मठ छोड़कर प्रवास करें, तो हिंदू समाज की कुरीतियां एवं भेद दूर हो जाएंगे। उन्होंने असम में ब्रह्मपुत्र नदी के एक ही द्वीप के निवासी चार प्रमुख गोस्वामी सत्राधिकारियों का उदाहरण दिया, जिनका विश्व हिंदू परिषद के सम्मेलन में आने पर ही परस्पर परिचय हुआ।

इस सम्मेलन में एक नई आचार स्मृति का भी जन्म हुआ। उडुपी पीठाधीश्वर स्वामी विश्वेश्तीर्थ के नेतृत्व में सभी संतों ने सामूहिक रूप से 'हिन्दवः सोदरा सर्वे, न हिन्दू पतितो भवेत' का उद्घोष किया। अर्थात सभी हिंदू सगे सहोदर भाई हैं। कोई भी हिंदू पतित नहीं है। हिंदुओं में अस्पृश्यता जैसी कोई चीज नहीं है। यदि वह कहीं है भी, तो वह कुरीति है। हिंदू धर्म कैसी भी अस्पृश्यता, छुआछूत या ऊंच-नीच को मान्यता नहीं देता। रूढ़ि को धर्म नहीं कहा जा सकता। इस नवीन आचार स्मृति के पारित होने से श्री गुरुजी बहुत प्रसन्न हुए। उन्होंने वहां व्यवस्था में लगे वरिष्ठ प्रचारक सूर्यनारायण राव को कहा कि उच्च स्वर में हिन्दू धर्म और संतों की जय-जयकार करें। इस सम्मेलन के प्रस्ताव और संकल्पों की पूरे देश में चर्चा हुई। श्रीगुरुजी ने कार्यकर्ताओं से कहा कि वे पूरे राज्य में ये प्रस्ताव भेजें तथा घर-घर इन पर चर्चा करें, जिससे छुआछूत की कुरीति मिटाई जा सके। ●●●

भारत बना तीसरा सबसे शक्तिशाली देश

देश ने आत्मनिर्भर भारत की कल्पना की थी जो अब साकार होता दिखाई दे रहा है। भारत सुपरपावर बन गया है। अब वह किसी क्षेत्र में हाशिए पर नहीं है। अब भारत ने दुनिया के सबसे शक्तिशाली देशों की कतार में तीसरे क्रमांक पर अपना कब्जा जमाया है। केवल हथियार या आर्थिक रूप से शक्तिशाली होना किसी भी देश का पैमाना नहीं होता है बल्कि कई अन्य चीजें भी उनमें शामिल होती हैं।

हाल ही में ऑस्ट्रेलिया के प्रतिष्ठित लोवी इंस्टीट्यूट ने Asia Power Index 2025 जारी किया है। रिपोर्ट के अनुसार एशिया के 27 देशों की ताकत को आठ मुख्य आयामों, सैन्य क्षमता, आर्थिक शक्ति, रक्षा नेटवर्क, कूटनीतिक प्रभाव, सांस्कृतिक पहुंच, लचीलापन और भविष्य की क्षमता के आधार पर मापा गया। इस बार की सूची में भारत ने तीसरे स्थान पर कब्जा जमाया। भारत की यह छलांग केवल सेना या हथियारों के दम पर नहीं है, बल्कि आर्थिक विकास, अंतरराष्ट्रीय साझेदारी और नई टेक्नोलॉजी में निवेश, इन सबका मिलाजुला असर लोवी रिपोर्ट में कहा गया है कि भारत का स्कोर 40.0 है, जो इसे मेजर पावर श्रेणी में मजबूती से स्थापित करता है। विदित हो कि रक्षा के मामले में भारत ने पिछले दशक में कई बड़े बदलाव किए हैं। आधुनिक मिसाइल सिस्टम, हाई-टेक लड़ाकू विमान, और सतह व पानी के नीचे से लड़ने की क्षमता ने सेना को ताकतवर बनाया है। इसके अलावा नौसेना की सबमरीन और एयरफोर्स की लम्बी दूरी की स्ट्राइक क्षमता ने भारत की सैन्य पहुंच को और भी प्रभावी बनाया है।

आर्थिक मोर्चे पर भी भारत तेजी से उभर रहा है। रिपोर्ट के अनुसार देश की GDP, तकनीकी निवेश और वैश्विक व्यापार नेटवर्क भारत को वैश्विक मंच पर मजबूत स्थिति देते हैं। इसके साथ ही भारत की डिजिटल शक्ति, स्टार्टअप इकोसिस्टम और ऊर्जा सुरक्षा इसे भविष्य की चुनौतियों के लिए तैयार बनाते हैं।

ज्ञातव्य हो कि सांस्कृतिक प्रभाव भी भारत की शक्ति का हिस्सा है- भाषा, फिल्म, संगीत और योग जैसी चीजें भारत को मजबूत करती हैं।

इस रिपोर्ट ने दुनिया को यह संदेश दिया है कि केवल हथियार और पैसा ही किसी देश की शक्ति तय नहीं करते हैं। रणनीतिक निवेश, तकनीकी प्रगति, कूटनीतिक क्षमता और सांस्कृतिक प्रभाव ये सब मिलकर एक देश को सुपरपावर बनाते हैं। ●●●

शादी-विवाह में अलग-अलग परम्पराओं व रीति-रिवाजों का पालन किया जाता है। कई देशों में ऐसी परम्परा या रीति-रिवाज हैं कि आप हैरत में पड़ जाएंगे तो चलिए हम आपको इसके बारे में बताते हैं।

विवाह की अनोखी प्रथा

फ्रांस

फ्रांस में होने शादी में एक पुरानी परम्परा का पालन किया जाता है जिसे चारीवारी (उहरीर्ळींरीळ) कहा जाता है। इस परम्परा के अनुसार, दोस्त और परिजन शादी वाली रात को दूल्हा-दुल्हन के दरवाजे को बर्तन से बजाते हैं और जोड़े को बाहर निकालकर ड्रिंक्स और स्नैक्स ऑफर किया जाता है।

स्कॉटलैंड

इस देश में दूल्हा-दुल्हन के ऊपर पर कूड़ा-कचरा और बुरी चीजों को गिराया जाता है। इस परम्परा के पालन करने का मकसद यह है कि दूल्हा-दुल्हन अपने जीवन में सभी समस्याओं का सामना करने के लिए तैयार रहें।

चीन

चीन में दूल्हा-दुल्हन को एक अजीबोगरीब परम्परा का पालन करना पड़ता है। यहां पर लड़की को शादी के एक महीने पहले से हर दिन एक घंटे रोना पड़ता है। परिजन भी लड़की के साथ मिल कर रोते हैं।

फिजी

फिजी में एक अजीबोगरीब रीति रिवाज का पालन किया है। इस देश में लड़की का हाथ मांगने के लिए लड़का आता है, तो उसे लड़के के पिता को वेल का दांत देना पड़ता है।

वेल्स

दुनिया में होने वाली शादियों में अजीबोगरीब की परम्पराओं की तरह वेल्स में भी एक अनोखे रीति रिवाज का पालन किया जाता है। यहां पर दुल्हन को दूल्हा लवस्पून देता है। इस पीछे का उद्देश्य यह है कि वह अपनी पत्नी को कभी खाली पेट नहीं सोने देगा। वह उससे विश्वास दिलाता है कि उसकी आवश्यकताओं को पूरा करेगा।

•••

धरती आबा जनजातीय संग्रहालय व कौशल केंद्र का उद्घाटन

विकास भारती के रांची कार्यालय परिसर में विगत दिवस धरती आबा जनजातीय संग्रहालय और धरती आबा जनजातीय ग्राम उत्कर्ष कौशल केंद्र का उद्घाटन किया गया। मुख्य अतिथि भारत सरकार के जनजातीय कार्य मंत्री जुएल ओराम व जे.पी आंदोलन के प्रणेता, वरिष्ठ पत्रकार पद्मभूषण रामबहादुर राय व भारत सरकार के रक्षा राज्यमंत्री संजय सेठ ने उद्घाटन किया। इस संग्रहालय में न केवल जनजातियों के जीवन स्तर एवं शैलियों को दर्शाया गया है, बल्कि झारखंड के शहीदों की जानकारी भी अंकित कराई गई है। आदिवासियों के अनुष्ठान, खान-पान को जीवंत कलाओं से भी दिखाया गया है। उक्त अवसर पर जनजातीय समाज के ऊपर लिखी गईं पांच पुस्तकों का विमोचन किया गया। इस अवसर पर पद्मश्री बलबीर दत्त, भाजपा के वरिष्ठ नेता श्री नागेंद्र नाथ, प्रभात खबर के प्रधान सम्पादक आशुतोष चतुर्वेदी, दैनिक भास्कर के सम्पादक संतोष सिंह, आईजीएनसीए के क्षेत्रीय निदेशक संजय झा, पूर्व राज्यसभा सांसद समीर ओरांव, सरला बिरला यूनिवर्सिटी के महानिदेशक डॉ. गोपाल पाठक, कुलपति डॉ. सी. जगन्नाथन, साईं नाथ यूनिवर्सिटी के कुलपति डॉ. एस.पी. अग्रवाल सहित अन्य गणमान्य अतिथि व जनजातीय बंधु/ भगिनी उपस्थित थे।

राम मंदिर बन गया, अब राष्ट्र मंदिर का निर्माण करना है -डॉ. मोहन भागवत पू. सरसंघचालक, रा.स्व.संघ

राष्ट्रीय स्वयंसेवक संघ के शताब्दी वर्ष के उपलक्ष्य में कोथरूड के यशवंतराव चव्हाण थिएटर में आदित्य प्रतिष्ठान की ओर से आयोजित कृतज्ञता समारोह में पू. सरसंघचालक डॉ. मोहन भागवत जी ने कहा कि विश्व कल्याण की पताका फहराते हुए श्रीराम मंदिर बन गया है। अब पहले से भी अधिक भव्य, शक्तिशाली और सुंदर राष्ट्र मंदिर का निर्माण करना है। इस अवसर पर कांची कामकोटि पीठ के जगद्गुरु शंकराचार्य विजयेंद्र सरस्वती, आदित्य प्रतिष्ठान के अध्यक्ष शंकर अभ्यंकर, अपर्णा अभ्यंकर उपस्थित थे। कृतज्ञता पुरस्कार को स्वीकार करते हुए सरसंघचालक प.पू. डॉ. मोहन भागवत जी ने कहा कि अपने समाज के लिए काम करने वाले राष्ट्रीय स्वयंसेवक संघ में आभार या अहंकार की कोई भावना नहीं है। संघ को पूरे समाज का संगठन अपेक्षित है क्योंकि समाज संगठित होगा, तभी राष्ट्र वैभव सम्पन्न बनेगा। राष्ट्र बल सम्पन्न होगा, तभी विश्व में सुख व शांति होगी। इसमें भी हम यह नहीं मानते कि संघ ही देश का भला करेगा, बल्कि देश तभी खड़ा होगा, जब समाज खड़ा होगा। उन्होंने कहा कि कठिन समय में समाज ने संघ का साथ दिया, इसी कारण संघ बड़ा हुआ। कार्यक्रम में वैश्विक संत भारती महाविष्णु मंदिर की आधारशिला का अनावरण, 'भारतीय उपासना' नामक कोष के तीसरे संस्करण का विमोचन और जितेंद्र अभ्यंकर कृत 'पंढरिश' नामक ऑडियो का विमोचन हुआ। कार्यक्रम का आरम्भ रामायण पर आधारित संगीत नाटिका 'निरंतर' से हुआ। सूत्र संचालन डॉ. आदित्य अभ्यंकर ने किया। जितेंद्र अभ्यंकर ने सम्पूर्ण वंदे मातरम् प्रस्तुत किया।

भानुदास मोरेश्वर कुलकर्णी का स्वर्गवास

राष्ट्रीय स्वयंसेवक संघ के वरिष्ठ स्वयंसेवक, सहकार सुगंध के वरिष्ठ प्रतिनिधि, सहकार भारती- धुले महानगर के वरिष्ठ कार्यकर्ता, भारतीय मजदूर संघ के वरिष्ठ कार्यकर्ता तथा हिंदी विवेक मासिक पत्रिका के प्रतिनिधि श्री भानुदास मोरेश्वर कुलकर्णी (आयु 73 वर्ष) का दुःखद निधन हो गया है। यह अत्यंत दुखद है एक उत्कृष्ट कार्यकर्ता हमारे बीच नहीं रहे। उन्होंने भारतीय विचार साधना पुस्तक विक्रय केंद्र भी कई वर्षों तक संचालित किया था। धुले-नंदुरबार क्षेत्र में सहकार सुगंध का विस्तार करने में उनका महत्वपूर्ण योगदान रहा है। हिंदी विवेक परिवार की और से श्री भानुदास मोरेश्वर कुलकर्णी जी को भावपूर्ण श्रद्धांजलि

TJSB SAHAKARI BANK LTD.
MULTI-STATE SCHEDULED BANK
Bharose ka Bank Bhavishya ka Bank
WHEELS ON YOUR WISHLIST?
Let's make it happen,
MY WISHLIST
Dream Car
New Phone
Dream Vacation
now at just 8.10%* p.a. with
TJSB Auto Finance Loan.
T&C Apply*
www.tjsb.bank.in | : 022-48897204